स्थापित 1968

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा का मुख पत्र

₹5

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

सामाजिक चेतना एवं जागरुकता के लिये सजग मासिक पत्रिका

(पल्लीवाल, जैसवाल, सैलवाल सम्बन्धित जैन समाज)

अंक 9 ✦ प्रकाशन तिथि : 25 मार्च 2021 ✦ वर्ष 9 ✦ कुल पृष्ठ 44 ✦ मूल्य ₹5

होली की हार्दिक शुभकामनाऐं

स्व. श्री स्वरूप चन्द जी जैन (मारसन्स)

(19 अगस्त 1927 – 31 अगस्त 2016)

जैन समाज के लिये आपका योगदान एवं समाज को एक सूत्र में बांधे रखने का अन्तिम सन्देश सदैव स्मरणीय रहेगा।

आपका प्रेरणामय जीवन हमारे लिए सदैव पथ प्रदर्शक रहेगा।

MARSON'S

ISO 9001:2000 CERTIFIED COMPANY

समस्त परिवारीजन
स्टाफ एवं कर्मचारीगण

MARSON'S ELECTRICAL INDUSTRIES

(Prop. MEI Power Pvt. Ltd.)

www.marsonselectricals.com • E-mail : info@marsonselectricals.com

1/189, Delhi Gate, Civil Lines, Agra-282002 (India)

Ph : +91-562-2520027, 2850812 • Fax : +91-562-2851306

Works :

Mathura Road, Artoni, Agra - 282007 (India)

Ph : +91-2641448, 2642327-28 • Fax : +91-562-2641435

TRANSFORMERS EXPORTED TO OVER 15 COUNTRIES

सामाजिक चेतना एवं जागरुकता के लिये सजग

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा का मुख पत्र

(पल्लीवाल, जैसवाल, सैलवाल सम्बन्धित जैन समाज)

Email : shripalliwaljain.patrika@gmail.com

मूल्य ₹ 5/-

अंक 9 ✦ 25 मार्च 2021 ✦ वर्ष 9

कुल पृष्ठ : 44

पूर्व प्रकाशन मथुरा से, सम्प्रति जयपुर से प्रकाशित

महासभा पदाधिकारी

श्री आर.सी. जैन *(अध्यक्ष)*
(सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)
एन-19, आदिनाथ नगर, जे.एल.एन. मार्ग,
जयपुर (राज.)-302018
मोबा. : 9414279070, 9829999335
E-mail : rcjainras@gmail.com

श्री राजीव रतन जैन *(महामंत्री)*
301-ए, सुख सागर अपार्टमेन्ट, 4, जानकी नगर मेन,
इन्दौर (म.प्र.)-452001, मोबा.: 9425110204
E-mail : jainrajeevratan@gmail.com

श्री अजीत जैन *(अर्थमंत्री)*
1द39, काला कुंआ हा.बोर्ड, अलवर (राज.)-301002
फोन : 0144-2360115, मोबा.: 9413272178
E-mail : akjain2021@yahoo.in

पत्रिका प्रबन्ध एवं सम्पादक मण्डल

डॉ. अनुपम जैन *(परामर्शदाता)*
'ज्ञानछाया', डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452009
फोन : 0731-2797790, मोबा.: 9425053822
E-mail : anupamjain3@rediffmail.com

श्री चन्द्रशेखर जैन *(संयोजक)*
86, मगन विला, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क
आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018
फोन : 0141-2553272, मोबा.: 9829134926
E-mail : csjain30@yahoo.co.in

श्री प्रकाश चन्द जैन *(सम्पादक)*
78, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार ''बी''
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर-302015
मोबा.: 9828374013
E-mail : pcjain49@gmail.com

श्री पारस जैन गहनौली *(सह-सम्पादक)*
बी-204बी, 10-बी स्कीम, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302018, मोबा.: 9928715869

श्री महेश चन्द जैन *(अर्थ संयोजक)*
36-सी, कृष्णा विहार विस्तार, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302015, मोबा.: 9828288830
E-mail : 3466mahesh@gmail.com

संपादक की कलम से....

इच्छा शक्ति

जिस प्रकार गेंद को जितनी ताकत से फेंका जाऐ उतनी ही जोर से वह वापस आती है, उसी प्रकार दृढ़ इच्छा शक्ति, पक्का इरादा और भाव विभोर होकर जो कार्य किया जाता है उसमें सफलता निश्चित मिलती है।

हम दृढ़ इच्छा शक्ति से पर्वत भी हिला सकते हैं। यदि हममें दृढ़ इच्छा शक्ति नहीं है तो इच्छाऐं चारों तरफ से हमें घेर लेती हैं, अनिर्णय की स्थिति बन जाती है। हम चाहे कितने ही बुद्धिमान, प्रतिभाशाली या धनवान हों बिना इच्छा शक्ति के कामयाब नहीं हो सकते और न ही जीवन में सफल हो सकते हैं।

यदि कोई मनुष्य किसी कार्य को सम्पन्न करने में असफल होता है तो इसका कारण उसका दुर्भाग्य नहीं बल्कि उसकी दृढ़ इच्छा शक्ति, संकल्प शक्ति की निर्बलता है। हमें जैसा बनना हो वैसे ही विचार पूर्ण आत्म विश्वास के साथ अपने मन में उत्पन्न करने चाहिए। अच्छे विचारों का असर शरीर के स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। यदि जीवन में सफलता चाहिए तो अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आपको दृढ़ इच्छा शक्ति, संकल्पवान बनना ही होगा। दृढ़ इच्छा शक्ति से परिपूर्ण व्यक्ति कभी भी विषम परिस्थितियों से घबराता नहीं है बल्कि वह अपने मार्ग में आने वाले अवरोधों व विषम परिस्थितियों से मुकाबला कर निरन्तर आगे बढ़ता रहता है। दृढ़ इच्छा शक्ति ही मनुष्य को निरन्तर कार्य करने की प्रेरणा देती रहती है। इच्छा शक्ति की दृढ़ता से ही शिवाजी ने औरंगजेब को छकाया। इच्छा शक्ति ने ही भगत सिंह को क्रान्तिकारी बनाया।

हमें अपने लक्ष्य भी अपनी क्षमताओं के अनुरूप तय करने चाहिए। क्षमता से अधिक लक्ष्य तय करने में कई प्रकार के खतरे होते हैं। व्यक्ति हताश व उत्साह रहित हो जाता है और पुन: प्रयास करना छोड़ देता है। अत: हमें अपना लक्ष्य अपनी क्षमता को ध्यान में रखते हुए दृढ़ इच्छा शक्ति से तय करना चाहिये।

अत: प्रगति दृढ़ इच्छा शक्ति व संकल्प शक्ति के बल पर निर्भर करती है। यदि हम आत्मविश्वास के साथ अपने विचारों को कार्यरूप में तब्दील करना शुरू कर दें तो जीवन में विकास के मार्ग स्वत: खुलते जाऐंगे। आनन्द व सुख की विचारधारा हमारे हृदय व परिवार में नव उत्साह का सृजन करे इसी उम्मीद के साथ.....

-आपका प्रकाश चन्द जैन

पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
यह लेखकों के निजी विचार माने जाने चाहिये।

पत्रिका विज्ञापन सहयोग राशि

	वार्षिक	मासिक
कवर पृष्ठ अंतिम (मल्टीकलर)	31,000/-	
कवर पृष्ठ द्वितीय (मल्टीकलर)	25,000/-	
कवर पृष्ठ तृतीय (मल्टीकलर)	25,000/-	
कलर पृष्ठ (मल्टीकलर)	21,000/-	2,500/-
पुण्य स्मृति आधा पृष्ठ श्वेत श्याम	10,000/-	1,000/-
पुण्य स्मृति पूरा पृष्ठ श्वेत श्याम	15,000/-	1,500/-
पत्रिका सदस्यता		
पत्रिका वार्षिक शुल्क	50/-	5/-
पत्रिका आजीवन सदस्य	500/-	
पत्रिका संरक्षक सदस्य	11,000/-	
पत्रिका हितैशी सदस्य	5100/-	

सूचना

(अ) रु. 500/- से कम के आर्थिक सहयोग राशि वालों के नाम पत्रिका में प्रकाशित नहीं किये जायेंगे।

(ब) जो सदस्य अपनी पत्रिका कोरियर द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं वह रु. 50/- प्रति माह के हिसाब से एक वर्ष का शुल्क रु. 600/- श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका को भेजें।

- *पत्रिका हेतु प्रकाशनार्थ सामग्री पत्रिका संयोजक/सम्पादक के पास ही प्रेषित करें, जो प्रत्येक माह की 15 तारीख तक प्राप्त होनी चाहिये।*
- *पत्रिका हेतु सदस्यता शुल्क/विशेष सहायता संयोजक के पास प्रेषित करें।*
- *पत्रिका में स्थान उपलब्ध होने पर ही विज्ञापन का प्रकाशन किया जायेगा।*
- *गत वर्ष के रंगीन विज्ञापनदाताओं की बकाया विज्ञापन सहयोग राशि शीघ्र संयोजक के पास भिजवाने का कष्ट करें।*

आप पत्रिका की भुगतान राशि 'श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका' के नाम से या ऑनलाईन खाते में भी भेज सकते हैं, विवरण निम्न है :-

"SHRI PALLIWAL JAIN PATRIKA"
Bank Name : **BANK OF BARODA** • Branch : **DURGAPURA, JAIPUR**
A/c No.: **38260100005783** • IFSC Code : **BARB0DURJAI**

पत्रिका राशि ऑनलाईन जमा कराने के बाद संयोजक को सूचना देवें एवं ट्रांसफर राशि का स्क्रीन शॉट भी भेजें, इसके अभाव में जमा राशि का समायोजन किया जाना संभव नहीं होगा।

चन्द्रशेखर जैन, संयोजक पत्रिका
मो.: 9829134926

मान्यवर,

सभी साधर्मी बन्धुओं को सुचित किया जाता है कि अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा को विधवा सहायता एवं अन्य सहयोग प्रदान करने हेतु राशि चैक, नकद या ऑनलाईन महासभा के खाते में जमा करवाई जा सकती है, जिसका विवरण निम्न है :-

"AKHIL BHARTIYA PALLIWAL JAIN MAHASABHA"
Bank Name : **STATE BANK OF INDIA** • Branch : **C-SCHEME, JAIPUR**
A/c No.: **51003656062** • IFSC Code : **SBIN0031361**

राशि जमा कराने के पश्चात अर्थमंत्री को अवश्य सूचित करें, जिससे जमा की रसीद प्रेषित की जा सके।

अजीत कुमार जैन, अर्थमंत्री महासभा
मो.: 9413272178

अलवर में दिनांक 28.02.2021 को आयोजित अ.भा.प. जैन महासभा की कार्यकारिणी की बैठक का कार्यवाही विवरण

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा की कार्यकारिणी की बैठक अध्यक्ष श्री आर.सी. जैन की अध्यक्षता मे दिनांक 28.02.2021 को श्री पल्लीवाल जैन महासभा भवन अलवर में आयोजित की गई। सर्वप्रथम भगवान महावीर के चित्र पर माल्यापर्ण कर दीप प्रज्जवलन किया गया। श्रीमती वीना जैन द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया, उसके उपरान्त अलवर शाखा के अध्यक्ष श्री वी.के. जैन, मंत्री श्री नरेन्द्र कुमार जैन, अर्थमंत्री श्री रूपेश जैन एवं अलवर शाखा के सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा बारी–बारी से महासभा के अध्यक्ष, महामंत्री एवं अर्थमंत्री तथा समस्त पदाधिकारियों एवं क्षैत्रीय सदस्यों को तिलक लगाकर एवं माल्यापर्ण कर स्वागत किया गया। अलवर शाखा अध्यक्ष श्री वी. के. जैन द्वारा प्रगति प्रतिवेदन पढ़ा गया।

महामंत्री द्वारा अध्यक्ष की अनुमति से मीटिंग को प्रारम्भ किया गया।

1.महामंत्री द्वारा गत बैठक दिनांक 09.08.2020 जो कि वर्च्युल आयोजित की गई का कार्यवाही विवरण का पठन किया गया, जिसका सर्वसम्मति से अनुमोदन किया।

2. निर्वाचन नियम एवं विधान संशोधन

विधान संशोधन समिति के संयोजक श्री अनिल कुमार जैन द्वारा विधान संशोधन के प्रस्ताव सदन में रखे गये। उनके द्वारा बताया गया कि समिति के समक्ष मुख्य रूप क्षैत्रीय सदस्यो की संख्या अनुपातिक करने, चुनाव व्यवस्था का विकेन्द्रीकरण करने आदि के सुझाव आये। समिति में चर्चा के दौरान एक सुझाव अध्यक्ष, महामंत्री एवं अर्थमंत्री पद पर रोटेशन करने का भी प्राप्त हुआ। चर्चा के उपरान्त यह तय हुआ कि निर्वाचन प्रक्रिया में संशोधन किया जावे तथा उसी के अनुरूप चुनाव प्रक्रिया विकेन्द्रीकरण एवं रोटेशन प्रणाली करने के प्रस्ताव तैयार कर सदन में चर्चा हेतु प्रस्तुत है।

अध्यक्ष श्री आर.सी. जैन द्वारा व्यवस्था दी गई कि हम सर्वप्रथम निर्वाचन नियमों में संशोधन प्रस्ताव पर चर्चा कर लें, उसके उपरान्त विधान संशोधन पर चर्चा करें।

महामंत्री द्वारा बताया गया कि संशोधन के प्रस्ताव समस्त कार्यकारिणी को उनके वाट्सऐप पर पूर्व में ही भिजवा दिये गये थे। अतः सभी बारी–बारी से अपने विचार रखें।

श्री जितेन्द्र जैन, पूर्व महामंत्री ने विचार रखते हुए बताया कि वर्तमान में लगभग 9000 आजीवन सदस्य हैं, लेकिन प्रतिनिधि सम्मेलन में भीड़ काफी कम होने लगी है। वर्तमान में 15 दिन पहले नामांकन भरे जाते हैं, यह व्यवस्था समाप्त होनी चाहिए, नामांकन पूर्व की तरह ही एक दिन पूर्व होने चाहिए, जिससे चुनाव में होने वाले अत्यधिक व्यय को रोका जा सके। हम यह व्यवस्था भी कर सकते हैं कि क्षैत्रीय सदस्य जो अपनी–अपनी शाखा से चुनकर आवें वह अध्यक्ष, महामंत्री, अर्थमंत्री का चुनाव करें तथा रोटेशन भी किया जा सकता है, जिससे सभी क्षैत्रों को प्रतिनिधित्व का अवसर मिले। बूथ वाईज चुनाव से शाखाओं में कटुता बढ़ेगी। यदि किसी शाखा में कोई विरोधी नहीं हुआ तो वहां बूथ कैप्चिरिंग की संभावना भी रहेगी। सरकार इतनी व्यवस्था करती है फिर भी चुनाव में आरोप लगते हैं, जबकि हमारे संसाधन सीमित हैं। बूथ वाईज

चुनाव उचित नहीं है। उन्होनें सुझाव दिया किया कि क्षैत्रीय सदस्यों के माध्यम से अथवा पूर्व व्यवस्था के अुनसार ही चुनाव करवाया जाना उचित है।

श्री ओम प्रकाश जैन एडवोकेट, जयपुर ने अपने विचार रखते हुए बताया कि रोटेशन प्रणाली नहीं होनी चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति जो कार्य करना चाहता है उसको आगे आने का अथवा चुनाव लड़ने का अधिकार है। नौ हजार सदस्यों की एक जगह व्यवस्था करना कठिन कार्य है, इसलिए चुनावों का विकेन्द्रीकरण आवश्यक है। एक दिन पूर्व की व्यवस्था भी उचित नहीं है। यह उस समय तो ठीक थी जब दो–तीन हजार सदस्य थे। हमें वापिस 1972 में नहीं जाना चाहिए । उन्होंने यह भी सुझाव रखा कि जब सर्वोच्च सदन साधारण सभा है तो प्रतिनिधि सभा का कोई औचित्य नहीं है।

श्री अशोक कुमार जैन पूर्व महामंत्री ने कहा कि रोटेशन का प्रस्ताव भारतीय संविधान के अनुकूल नहीं है। प्रतिनिधि सभा जो प्रस्ताव पारित कर देती है, वह कानून बन जाता है। 24.08.2010 को प्रतिनिधि सभा में रोटेशन का प्रस्ताव निरस्त कर दिया गया था। अतः इस पर विचार नहीं किया जाना चाहिए। वैसे भी यह प्रस्ताव वैधानिक नहीं है तथा सामाजिक समरसता के भी अनुकूल नहीं है।

श्री मुकेश जैन (अलीपुर), जयपुर ने अपने विचार रखते हुए कहा कि रोटेशन प्रणाली उचित नहीं है। यह लोकतंत्र के गला घोटने की कोशिश है। वोटिंग बूथ वाईज होनी आवश्यक है।

श्री देवेन्द्र जैन, जयपुर ने बूथ वाईज चुनाव के पक्ष में एवं रोटेशन प्रणाली के विपक्ष में अपने विचार रखे तथा उन्होनें सुझाव दिया कि ऑन–लाईन वोटिंग करवाने की व्यवस्था पर भी विचार करना चाहिए।

श्री पारस मल जैन, जयपुर ने रोटेशन के विपक्ष में विचार रखते हुए कहा कि काबिल व्यक्ति को आगे आना चाहिए, रोटेशन की कोई आवश्यकता नहीं है।

श्री मगन जैन, अलवर संगठन मंत्री ने कहा कि रोटेशन प्रणाली नहीं होनी चाहिए। प्रजातंत्र में सबका अधिकार है– चुनाव लड़ना। बूथ वाईज चुनाव कराने पर व्यय अधिक होगा तथा चुनाव निष्पक्ष होने की संभावना नहीं है। वर्तमान व्यवस्था ही ठीक है।

श्री शुभम जैन, सह संयोजक युवा ने अपने विचार रखते हुए बूथ वाईज चुनाव प्रक्रिया को सही नहीं बताते हुए कहा कि इससे समाज क्षैत्रवाद में फंस जायेगा एवं व्यय भी अधिक होने की संभावना है।

सुनीता जैन, भरतपुर– रोटेशन वर्तमान समय में प्रांसगिक नहीं है। समाज सेवा के लिए कोई भी आगे आ सकता है। चुनावों का विकेन्द्रीकरण होना चाहिए जिससे अधिकतम वोटिंग होगी।

श्री नरेन्द्र जैन मंत्री अलवर शाखा– रोटेशन नहीं होना चाहिए ना ही चुनाव प्रक्रिया का विकेन्द्रीकरण होना चाहिए। वर्तमान व्यवस्था ही रहनी चाहिए। उन्होनें सुझाव दिया कि शाखाओं में केवल अध्यक्ष पद का ही चुनाव होना चाहिए।

श्री राकेश जैन, बजाज, आगरा– रोटेशन प्रणाली के पक्ष में अपने विचार रखे तथा चुनाव के विकेन्द्रीकरण नहीं करने एवं वर्तमान चुनाव प्रणाली यथावत रखने हेतु सुझाव दिया।

श्रीमती वंदना जैन, आगरा– वर्तमान प्रणाली सही है, इसे ही यथावत रखा जावे।

श्री संजय जैन, जयपुर,सहमंत्री– वर्तमान चुनाव प्रणाली में 9000 सदस्यों की एक जगह व्यवस्था करना बहुत कठिन कार्य है, जिससे काफी अव्यवस्था होती है। अतः चुनाव का विकेन्द्रीकरण होना चाहिए, जिससे प्रत्येक मतदाता को अपने मत का प्रयोग करने का अवसर मिल सके। हर व्यवस्था के गुण व अवगुण होते हैं, हमें सुधारों पर विचार करना चाहिए। रोटेशन प्रणाली सही नहीं है, इससे मतदाता के अधिकार का हनन होता है, मतदाता को अपने पसंद के प्रत्याशी चुनने से रोका जा रहा है। अतः रोटेशन प्रणाली नहीं होनी चाहिए।

श्री मनीष जैन, आगरा– केन्द्र का चुनाव है एक ही स्थान पर होना चाहिए, जिससे सम्मलेन हो सके। बूथ वाईज चुनाव होने से व्यय बढेगा। अतः विकेन्द्रीयकरण नहीं होना चाहिए।

महामंत्री ने बताया कि इन्दौर में वर्ष 2018 में हुए प्रतिनिधि सभा में यह विचार आया था कि चुनाव की प्रक्रिया में सुधार किया जाये उसी के आधार पर यह प्रस्ताव कार्यकारिणी के समक्ष लाया गया है। कार्यकारिणी को ही इस पर निर्णय करना है।

श्री अंकुर जैन, अलवर– कोई भी एक स्थान ऐसा नहीं है, जहां 9000 सदस्यों की ठहरने की व्यवस्था हो सके, इसलिए विकेन्द्रीयकरण होना चाहिए। रोटेशन प्रणाली नहीं होनी चाहिए।

श्री सुभाष जी पालम– वर्तमान चुनाव प्रणाली बहुत खर्चीली है। ऑन–लाईन वोटिंग होनी चाहिए।

श्री विनोद जैन, दिल्ली ने अपने विचार रखते हुए कहा कि वर्तमान चुनाव प्रणाली यथावत रखी जावे।

श्री वी.के. जैन अध्यक्ष अलवर शाखा ने अपने विचार रखते हुए कहा कि रोटेशन की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं चुनाव विकेन्द्रीकरण के पक्ष में हूं। शाखा के चुनाव भी केन्द्र के चुनाव के साथ ही होने चाहिए।

श्री कमल जैन, खोह– रोटेशन नहीं होना चाहिए। क्षैत्रीय सदस्यों का चुनाव हो और सदस्य केन्द्रीय कार्यकारिणी का

चुनाव करे।

श्री विमल जैन, आगरा, संयुक्त मंत्री– चुनावों का सरलीकरण किया जावे। इन्दौर में अधिक सदस्य पहुंच गये, इसलिए सुधार की आवश्यकता पड़ी। यदि एक ही स्थान पर चुनाव होंगे तो मेल–जोल बढ़ेगा इसलिए विकेन्द्रीयकरण नहीं होना चाहिए। रोटेशन प्रणाली होनी चाहिए।

श्री निर्मल जैन, आगरा– जो व्यवस्था चल रही है वही रखी जावे। नामांकन दो दिन पूर्व होने चाहिए।

श्री राजेन्द्र जैन उपाध्यक्ष, अलवर शाखा– चुनाव प्रक्रिया का विकेन्द्रीयकरण होना चाहिए तथा रोटेशन नहीं होना चाहिए।

श्री सतीश जैन क्षैत्रीय संगठन मंत्री, पालम– जो इस समय चल रहा है वह बढ़िया है। क्षैत्र वाईज चुनाव होने पर आपसी रंजिश बढ़ेगी।

श्रीमती रेखा जैन उपाध्यक्ष ने अपने विचार रोटेशन प्रणाली के पक्ष रखते हुए चुनाव विकेन्द्रीयकरण पर असहमति जताते हुआ कहा कि इससे खर्चा बढ़ेगा।

श्री नवीन जैन अध्यक्ष आगरा ग्रामीण शाखा ने वर्तमान प्रक्रिया यथावत रखने का सुझाव दिया।

अध्यक्ष श्री आर.सी. जैन ने बताया कि इन्दौर में हुई प्रतिनिधि सभा में यह विचार आया कि चुनाव प्रक्रिया में सुधार होना चाहिए, इसलिए हमारा नैतिक दायित्व था कि हम इसे आगे बढ़ाते। इसलिए विधान संशोधन समिति का गठन किया गया तथा समिति द्वारा प्राप्त सुझाव/ प्रस्ताव को आपके समक्ष रखा गया। जहां तक रोटेशन प्रणाली की बात है, उस पर अधिक व्यक्तियों की असहमति के विचार आये हैं। अब हमें निर्णय करना है कि वर्तमान चुनाव प्रणाली ही रखी जावे या विकेन्द्रीयकरण किया जावे। अध्यक्ष द्वारा व्यवस्था दी गई कि जिनको वोटिंग का अधिकार है, कृपया वही सदन में रहे तथा शेष सभी से भोजन करने का निवेदन किया गया। प्रस्ताव पर वोटिंग कराई गई तथा अधिकतर सदस्यों द्वारा वर्तमान व्यवस्था ही रखे जाने के पक्ष में अपना मत दिया। अतः विधान संशोधन प्रस्ताव यहीं निरस्त कर दिया गया।

भोजनावकाश उपरान्त महामंत्री द्वारा विधवा सहायता का विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि यदि कार्यकारिणी का प्रत्येक सदस्य एक–एक विधवा सहायता देते हैं तो 61 विधवा सहायता होती हैं। अध्यक्ष श्री आर.सी. जैन द्वारा लगातार तीन वर्षों तक प्रत्येक वर्ष दस–दस सहायताऐं दी हैं। अतः सभी से निवेदन है कि अधिक से अधिक विधवा सहायता में सहयोग देवें। इसके उपरान्त (1) श्रीमती सुषमा जी जैन, ग्वालियर, (2) श्री महेन्द्र जैन, कोटा (3) श्रीमती उर्मिला जैन, जयपुर (4) श्रीमती सुनीता जैन, भरतपुर (5) श्री पारस चन्द जैन (खेरली), जयपुर (6) श्रीमती वन्दना जैन श्री वीरेन्द्रकुमार जैन, आगरा (7) श्रीमती रेखा जैन (उपाध्यक्ष) आगरा (8) श्री मगन जी जैन, (क्षैत्रीय संगठन मंत्री) अलवर (9) श्री अनन्त कुमार जैन, अलवर (10) श्री वी.के. जैन अध्यक्ष अलवर शाखा द्वारा एक–एक विधवा सहायता एवं (11) श्री अशोक जैन (हलवाई) अजमेर द्वारा दो विधवा सहायता देने की घोषणा सदन में की गई।

श्री मगन कुमार जैन, अलवर ने बताया कि कई प्रकरण ऐसे ध्यान में आये हैं कि जिनको हम विधवा सहायता दे रहे हैं, उनको अन्य संस्थाओं से भी सहायता मिल रही है। अतः ऐसी सहायताओं पर विचार करना चाहिए तथा उनको एक जगह से ही सहायता दी जानी चाहिए।

अध्यक्ष द्वारा बताया गया कि हम मात्र 1000/– प्रतिमाह सहायता देते हैं, जो वर्तमान समय में काफी कम है। यदि किसी को दूसरी संस्था से सहायता मिल भी रही है तो हमें नजरअंदाज करना चाहिए, हमें सकरात्मक सोचना चाहिए, यदि कोई पात्र महिला सहायता से वंचित है, तो उसको सहायता देनी चाहिए, यदि विधवा सहायता हेतु राशि कम पड़ेगी तो मैं राशि एकत्रित करके दूंगा।

अन्य विषय

श्री जितेन्द्र जैन आगरा, पूर्व महामंत्री द्वारा वर्तमान में समाज की वैवाहिक स्थिति पर अपने विचार रखे। उन्होंने बताया कि वर्तमान अविवाहित लड़कों की संख्या काफी बढ़ गई है जिससे सामाजिक विषमता हो रही है। हमें इस पर ध्यान देना चाहिए। अन्तर्जातीय विवाह भी काफी हो रहे हैं, जिससे तलाकों की संख्या भी बढ़ रही है। यथा संभव विवाह समाज में ही करें तथा लोगों को समझाये। हम सबको इस पर विचार करना चाहिए।

श्री वी.के. जैन अध्यक्ष अलवर शाखा द्वारा कहा गया कि हमें अलवर में केवल अध्यक्ष पद का ही चुनाव कराने की अनुमति दी जावे।

अंत में अध्यक्ष द्वारा अलवर शाखा द्वारा की गई व्यवस्थाओं की भूरि–भूरि प्रंशसा की गई तथा अलवर शाखा की सम्पूर्ण कार्यकारिणी का धन्यवाद दिया गया तथा बैठक में पधारे सभी पदाधिकारियों, क्षैत्रीय सदस्यों एवं विशेष आमंत्रित सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित किया कि सभी ने शान्ति पूर्वक अपने विचार रखे।

महामंत्री द्वारा अवगत कराया गया विगत एक वर्ष में कोरोना काल में समाज के कई लोग अब हमारे बीच नहीं रहे। अतः उन सब के लिए दो मिनिट का मौन रखा जाये। दो मिनिट का मौन रख श्रद्धांजलि देने के उपरांत बैठक समाप्त कर दी गई।

बधाई

श्री चंद्रशेखर जैन जेएसजीआईएफ के इन्टरनेशनल सेक्रेटरी बने

श्री चंद्रशेखर जैन (संयोजक, श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका) जैन सोश्यल ग्रुप्स इंटरनेशनल फेडरेशन मुम्बई के चुनाव में नार्दन रीजन, जयपुर से इन्टरनेशनल सेक्रेटरी बने। विश्व की सबसे बड़ी दम्पति सदस्यों की संस्था जेएसजीआईएफ मुम्बई के वर्ष 2021–23 के सम्पन्न चुनाव में जयपुर निवासी श्री चंद्रशेखर जैन इन्टरनेशनल डायरेक्टर के पद पर निर्विरोध निर्वाचित होने के बाद दिनांक 21.3.2021 को मुम्बई में हुए फेडरेशन के चुनाव में इन्टरनेशनल सेक्रेटरी पद पर निर्वाचन हुआ है। उल्लेखनीय है कि युवा समाजसेवी श्री सी.एस. जैन– जैन सोश्यल ग्रुप महानगर जयपुर के पूर्व अध्यक्ष होने के साथ जेएसजीआईएफ नार्दन रीजन के पूर्व चेयरमैन पद पर रह चुके हैं। श्री जैन राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश उपाध्यक्ष पद पर भी अपनी सेवाएं दे रहे हैं। अ.भा.प. जैन महासभा श्री सी.एस. जैन की इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाऐं प्रेषित करती है।

डॉ. निमिषा जैन, डायबिटीज़ एवं थायरॉयड रोग विशेषज्ञ संतोकबा दुर्लभजी हॉस्पिटल, जयपुर को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय तैरापन्थी महिला मण्डल सी स्कीम, जयपुर द्वारा कोरोना वॉरियर्स के रूप में की गई सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। डॉ. निमिषा जैन, अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा के राष्ट्रीय युवा संजोयक, श्री नीतीश जैन की बहिन है, डॉ. निमिषा ने एंडोक्रिनोलोजी में डीएम पीजीआई चंडीगढ़ से किया है। राजापार्क जयपुर में स्थित आरोगिता हॉस्पिटल भी ये स्वयं चलाती हैं। अ.भा.प. जैन महासभा डॉ. निमिषा के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए शुभकामनाऐं प्रेषित करती है।

अपर्णा जैन सुपुत्री श्री प्रसून कुमार जैन दिवर्या द्वारा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर की सीनियर सैकेंडरी परीक्षा (विज्ञान वर्ग) 2020 में 97.60% अंक प्राप्त कर अल्पसंख्यक एवं सामान्य वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर राज्य सरकार द्वारा ***'इंदिरा प्रियदर्शनी पुरस्कार'*** जो कि जिले में प्रथम रहने वाली एक बालिका को दिया जाता है

जिसमें रु. 1,00,000/– की प्रोत्साहन राशि, एक स्कूटी एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है, से पुरस्कृत किया गया है। साथ ही अपर्णा को ***'बालिका प्रोत्साहन योजना'*** में एक प्रशस्ति पत्र एवं रु. 5,000/– की राशि राज्य सरकार के बालिका शिक्षा फाउंडेशन विभाग द्वारा अलग से प्राप्त की है । यहां यह उल्लेखनीय है कि बालिका को पूर्व में भी राज्य सरकार द्वारा कक्षा 10 में जिले में अल्पसंख्यक वर्ग में ***'पद्माक्षी पुरस्कार'*** प्राप्त हुआ है जिसके अन्तर्गत रु. 75,000/– की राशि और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है। अ.भा.प. जैन महासभा अपर्णा के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए शुभकामनाऐं प्रेषित करती है।

आयुषी जैन सुपुत्री श्री नरेश चन्द जैन (मंत्री श्री जैन रत्न हितेषी श्रावक संघ नदबई) ने एम.ए. (ड्राईग एण्ड पेन्टिंग)–2019 में महाराजा सूरजमल ब्रज विश्वविद्यालय भरतपुर से प्रथम श्रेणी एवं विश्वविद्यालय के अधीन महाविद्यालयों में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर दिनांक 10 मार्च 2021 को विश्वविद्यालय प्रांगण में राजस्थान के राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र की वर्चुअल अध्यक्षता में कुलपति द्वारा भव्य समारोह में गोल्ड मेडल से सम्मानित किया। यह द्वितीय दीक्षान्त समारोह का भव्य कार्यक्रम था।

अनुमोदना

श्री अनुराग जैन पुत्र श्री वी.के. जैन (अहमदाबाद) हाल निवासी मुम्बई द्वारा विधवा महिलाओं एवं निःशक्त पुरूष/महिला को समाज में उचित सम्मान प्राप्ति हेतु अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा को रु. 50,000/– रसीद संख्या 4960 दि. 16.03.2021 द्वारा सप्रेम भेंट किए। महासभा उनके इस आत्मीय सहयोग के लिए आभार व्यक्त करती है।

महासभा सदस्यता

1. **श्री धनय कुमार पनवेलकर (जैन)** पोस्ट पार्श्वनी, जिला नागपुर *(र.सं. 4881)*
2. **श्री कुलदीप/विजय कुमार जैन,** ग्राम नगर, पोस्ट बिचपुरी, अछनेरा, जिला आगरा *(र.सं. 4882)*
3. **श्री राहुल जैन/उत्तम चन्द जैन,** एस.सी. 1201, कल्पतरू, महादेव नगर, मजरी रोड, पूणे (महाराष्ट्र) *(र.सं. 4883)*
4. **बीना/उत्तम चन्द जैन,** 2/237, न्यू कॉलोनी, बिरला नगर, ग्वालियर (मध्य प्रदेश) *(र.सं. 4884)*
5. **अंकिता/प्रिंस कुमार जैन,** ग्राम पोस्ट खोह वाया रोनीजथान, तहसील लक्ष्मणगढ़, अलवर *(र.सं. 4885)*
6. **श्रीमती संगीता जैन पत्नी श्री निर्मल जैन,** 105, पानदरीबा, महावीर विहार, जीरो रोड, इलाहाबाद *(र.सं. 4886)*
7. **श्री निशंक जैन/निर्मल जैन,** 105, पानदरीबा, महावीर विहार, जीरो रोड, इलाहाबाद *(र.सं. 4887)*
8. **रूबी जैन/निर्मल जैन,** 105, पानदरीबा, महावीर विहार, जीरो रोड, इलाहाबाद *(र.सं. 4888)*
9. **श्री अशोक कुमार/श्री अशरफी लाल जैन,** 17/205, चन्द्र भवन, सिटी स्टेशन–बी रोड, आगरा *(र.सं. 4889)*
10. **श्री अशोक कुमार/श्री अशरफी लाल जैन,** 17/205, चन्द्र भवन, सिटी स्टेशन–बी रोड, आगरा *(र.सं. 4889)*
11. **ऊषा रानी जैन/श्री अशोक कुमार जैन,** 17/205, चन्द्र भवन, सिटी स्टेशन–बी रोड, आगरा *(र.सं. 4890)*
12. **श्री आदिश जैन/श्री अशोक कुमार जैन,** 17/205, चन्द्र भवन, सिटी स्टेशन–बी रोड, आगरा *(र.सं. 4891)*
13. **निशु जैन/श्री अशोक कुमार जैन,** 17/205, चन्द्र भवन, सिटी स्टेशन–बी रोड, आगरा *(र.सं. 4892)*
14. **श्री रिषभ जैन बजाज/श्री राकेश जैन बजाज,** एल–16, प्रतीक एन्क्लेव, कमला नगर, आगरा *(र.सं. 4893)*
15. **श्री प्रियांशु जैन/श्री सतीश जैन,** डी–39, मंगलापुरी, ग्राम द्वारका, पालम, नई दिल्ली–45 *(र.सं. 4894)*
16. **श्री निर्मल जैन/श्री बी.एल. जैन,** 105, पानदरीबा, महावीर विहार, जीरो रोड, इलाहाबाद *(र.सं. 4895)*
17. **श्री गौरव जैन/श्री सतीश जैन,** 504, यशोदा रेजीडेन्सी, गालव नगर, बहदापुर, ग्वालियर *(र.सं. 4896)*
18. **नीलम जैन/श्री गौरव जैन,** 504, यशोदा रेजीडेन्सी, गालव नगर, बहदापुर, ग्वालियर *(र.सं. 4897)*

होली में कुछ ऐसा हो जाये

इस वर्ष की होली में कुछ ऐसा हो जाए,
होलिका दहन में कोरोना स्वाहा हो जाए।

इस वर्ष का वातावरण कुछ ऐसा हो जाए,
देश, दुनिया में,अमन और चैन आ जाए।

इस वर्ष की पिचकारी कुछ ऐसी हो जाए,
प्यार, मोहब्बत के रंग से सबको रंग जाए।

इस वर्ष की गुलाल कुछ ऐसी महक जाए,
दिलों की दूरिया, दिलों से दूर कर जाए।

इस वर्ष की गुंझिया कुछ ऐसी बन जाए,
कड़वाहट दूर कर सबको मीठा कर जाए।

इस वर्ष की डफली कुछ ऐसी बज जाए,
रोग और शोक दूर कर खुशियां दे जाए।

इस वर्ष होली मिलन कुछ ऐसा हो जाए,
गिले शिकवे, गलत फैमिया दूर कर जाए।

इस वर्ष रंगों की बारिश कुछ ऐसी हो जाए,
बैरंग जीवन को रंगों से आबाद कर जाए।

इस वर्ष की बसंत ऋतु कुछ ऐसी हो जाए,
प्रेम पुष्पों से धरती सारी सुवासित हो जाए।

इस वर्ष प्रार्थना कुछ ऐसी कबूल हो जाए,
हर घर मे सुख शांति का साम्राज्य हो जाये।

इस वर्ष की होली में कुछ ऐसा हो जाए,
होलिका दहन में कोरोना स्वाहा हो जाए।

–सुनीता जैन 'सुनीति'
व्याख्याता, भरतपुर

विधवा सहायता

★ **श्री अशोक जी जैन, हार्दिक जैन,** टी–12 अ, उमासूत नगर, केजलपुर, अहमदाबाद ने अपने पिता स्व. श्री वेणी लाल जी जैन एवं माताश्री स्व. श्रीमती मीना देवी जी जैन के षष्टम पुण्य तिथि पर रु. 2,100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4906)*

★ **श्री शेखर चन्द जी जैन** (सेवानिवृत्त आर.ए.एस.) वैशाली नगर, जयपुर ने विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4901)*

★ **श्रीमती मोहन बाई जी जैन,** जैन मन्दिर के सामने, स्टेशन बजरिया, कोटा ने विधवा सहायता हेतु रु. 6,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4902)*

★ **श्री राकेश कुमार जी जैन,** जैन मन्दिर के सामने, स्टेशन बजरिया, कोटा ने विधवा सहायता हेतु रु. 6,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4903)*

★ **श्रीमती सुरभि जी सहगल** पुत्री श्री सुधीर जैन, 503, रॉयल एम्पायर, टी–37, लोखण्ड वाला सर्किल के पास, अन्धेरी पश्चिम, मुम्बई ने विधवा सहायता हेतु रु. 24,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4904)*

★ **श्रीमती प्रेमवती जी जैन एवं श्री आर.के. जैन,** 46, एस.बी.बी.जे. ऑफिसर्स कॉलोनी, न्यू सांगानेर रोड, मानसरोवर, जयपुर ने विधवा सहायता हेतु रु. 11,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4905)*

★ **श्री चन्द्र प्रकाश जी जैन** (सर्राफ), राष्ट्रीय विवाह संयोजक, मुरैना ने विधवा सहायता हेतु रु. 6,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4874)*

★ **श्री यतीन्द्र कुमार जी जैन, संजय कुमार जी जैन,** मुरैना ने विधवा सहायता हेतु रु. 5,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4875)*

★ **श्री राजेन्द्र जी जैन भण्डारी,** मुरैना ने विधवा सहायता हेतु रु. 5,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4876)*

★ **श्री पंकज जी जैन,** मुरैना ने विधवा सहायता हेतु रु. 5,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4877)*

★ **श्री गौरव कुमार उमेश कुमार जैन,** शान्ति मेडिको, मुरैना ने विधवा सहायता हेतु रु. 2,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4878)*

★ **श्री राजेन्द्र जी जैन भुज वाले (राजू),** मुरैना ने विधवा सहायता हेतु रु. 2,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4879)*

★ **श्री मुरारी लाल जी,** शाहजपुर वाले, मुरैना ने विधवा सहायता हेतु रु. 2,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4880)*

★ **श्री मगन चन्द जी जैन,** हरि साउण्ड सर्विस, महावीर भवन, अलवर ने विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4898)*

★ **श्री पवन कुमार जी जैन,** बी–37, वैशाली नगर, जयपुर ने अपनी पत्नी स्व. श्रीमती शशी जी जैन की छठी पुण्यतिथि पर विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4951)*

★ **श्री रमेश चन्द जी जैन एवं श्री पंकज जी जैन,** 12, रेलवे रोड, पालम कॉलोनी–110077 ने विधवा सहायता हेतु रु. 6,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4952)*

★ **श्रीमती सुषमा जी जैन** पत्नी श्री राज कुमार जैन, 301, शिव रेजीडेन्सी, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर ने अपनी विवाह की 25वीं वर्षगांठ के उपलक्ष पर रु. 12,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4953)*

★ **श्री रमेश चन्द जी जैन एवं श्री पंकज जी जैन,** 12, रेलवे रोड, पालम कॉलोनी–110077 ने विधवा सहायता हेतु रु. 5,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4954)*

★ **श्री कुशल कुमार जी जैन एवं श्री अंकुर जी जैन,** 577, स्कीम नं. 10, अलवर ने विधवा सहायता हेतु रु. 6,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4956)*

★ **श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन, श्री शुभम जी जैन,** बी–3, रंजीत नगर, भरतपुर ने अपनी पूजनीय माताजी श्रीमती चन्द्रवती देवी जी जैन के 80वें जन्म दिवस पर रु. 12,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4957)*

★ **श्री धर्मचन्द जी पुनीत कुमार जैन,** 1/534, एचबीकेके, अलवर ने श्री धर्मचन्द जैन के 78वें जन्म दिवस पर रु. 2,100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4958)*

★ **श्री महावीर प्रसाद जी जैन** (मुबारिकपुर वाले) मण्डल प्रबन्धक, न्यू इंडिया एश्योरेन्स कं., 455, लाजपत नगर, स्कीम नं. 2, अलवर ने विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4959)*

★ **श्री श्याम लाल जी जैन,** 786–ए, महावीर नगर–द्वितीय, कोटा ने विधवा सहायता हेतु रु. 8,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4907)*

★ **श्री आशा जी जैन,** 786–ए, महावीर नगर–द्वितीय, कोटा ने विधवा सहायता हेतु रु. 8,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4908)*

★ **श्री यतेन्द्र जी जैन,** 786–ए, महावीर नगर–द्वितीय, कोटा ने विधवा सहायता हेतु रु. 8,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4909)*

QUALITY WORKS • PROMPT SERVICE • COMPETITIVE RATES

PRODUCTS :
Transmission Line Towers (HT&LT), Telecom Towers,
Wind Mill Structures, Sub-Station Structures, Lattice Structures,
RSJ Poles & GI Earthing Strips.

FULLY EQUIPPED ULTRA MODERN FABRICATION AND GALVANIZING PLANT WITH EOT CRANES, HOISTS, POWER TROLLEYS, TESTING LABS & ETP SYSTEM TO ENSURE GREEN ENVIRONMENT

Fabrication & Galvanizing done as per
IS, BIS, ASTM, DIN & ISO Standards
Bath Size : 9m (L) x 0.8m (W) x 1.4m (D)
Plant Capacity : 18000 Tons / Year

Vijay Transmission PVT. LTD.

Vijay Transmission PVT. LTD.

Plant :
PNH No. 100, Village Kanhera, Block Dharsiva, Uria Acholi Marg, Dist. Raipur-492001
Tel.: (0771) 305 4900 • Fax : (0771) 232 3162

Corporate Office :
210, 211, 2nd Floor, Kamla Space, S.V. Road, Santacruz (West), Mumbai-400054
Tel.: 022-262183401 • Fax : +91-022-26609915
E-mail : info@vijaytransmission.com

भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. सुभाष चंद जी जैन
(10.06.1960 - 10.03.2020)

स्व. विनोद कुमार जी जैन
(21.04.1962 - 01.02.2008)

आपका स्नेह, सद्व्यवहार, सेवा भावना एवं
प्रेरणादायक चरित्र हमारा सदैव मार्गदर्शन करता रहेगा।
हम सभी आपको शत्-शत् नमन करते हुए अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

माया देवी जैन
(धर्मपत्नी स्व. श्री सुभाष चंद जैन)

विमला देवी जैन
(धर्मपत्नी स्व. श्री विनोद कुमार जैन)

माता-पिता :
शिवचरण लाल जैन-गीता देवी जैन
ताईजी : दुर्गी देवी जैन
चाचा-चाची :
धरमचंद जैन-त्रिशला जैन, *आगरा*
भाई :
मुकेश जैन-मंजू जैन
राकेश जैन-नीलम जैन
राजेश जैन-प्रियंका जैन
पुत्र-पुत्रवधू :
नितिन जैन-नीति जैन
सौरभ जैन-ऋतु जैन

भतीजे :
विवेक जैन, शुभम जैन, शोभित जैन,
हिमांशु जैन, प्रियांशु जैन
पोता, पोती :
आरू जैन, नित्य जैन, दिविशा जैन
भानजे, भानजी :
कुलिस जैन, आयुषी, तन्नू, गुड़िया, किंशु, हर्षित

बहन-बहनोई :
राजकुमारी जैन-हेमचंद जैन
डिंपल जैन-पवन जैन
पुत्री-दामाद :
मोनिका-टिंकू जैन
प्रियंका-अंकुर जैन
दीपिका-धनेश जैन
निकिता-आशीष जैन
मनु-राहुल मित्तल
प्रिया-अभय जैन
चार्मी-रोनक जैन

प्रतिष्ठान

★ दीपिका ग्रुप ★ वर्धमान इंडस्ट्रीज इंडिया, जयपुर ★ दीपिका ट्रेडर्स, जयपुर ★ डीबीसी, जयपुर
★ जैन पेट्रोलियम, मंडावर ★ राधिका बैग्स, अलवर ★ जैन एजेंसीज, अलवर

मो.: 9414067972

दुःख से मुक्ति कैसे मिले?

सुखी जीवन का राज सिर्फ इतना सा है कि हम अभाव में नहीं, सद्भाव में जिएं। कर्तापन के बोझ को अपने सिर से उतार फेंकें और अहंकारशून्य, सच्चाईपूर्ण जीवन–यापन करें। प्रदर्शन से बचें और अध्यात्म की दिशा में गतिशील हों। जीवन में तर्क को प्रश्रय न दें क्योंकि जहाँ तर्क है, कहाँ नर्क है। वहाँ संघर्ष है, विवाद है, दुःख है, पीड़ा है। जहाँ समर्पण है वहाँ स्वर्ग है, प्रेम है, संवाद है, सौहार्द है। अगर दुःख से मुक्त होना है तो जीवन को अर्थ देना होगा और अर्थ को जीवन। जिन्दगी तो हिम्मत का सौदा है, पुरुषार्थ करो, सफलताएं अवश्य मिलेंगी। याद रखिये सद्भाव ही स्वर्ग है और अभाव ही नर्क है । संतोष ही जीवन है और तृष्णा ही मृत्यु है।

किसी ने प्रश्न पूछा था– दुःख से मुक्ति कैसे मिले ?

दुःख से मुक्ति मिलना सहज तो नहीं है, लेकिन असंभव भी नहीं है। दुःख से मुक्ति संभव है। दुःख से मुक्त हुआ जा सकता है, सुख को उपलब्ध हुआ जा सकता है। लेकिन इससे पहले कि दुःख से मुक्त कैसे हों, सुख को उपलब्ध कैसे हों, यह समझ लेना अत्यन्त आवश्यक है कि दुःख क्या है और सुख क्या है ?

दुःख का उपाय है अभाव की जिन्दगी जीना। अभाव पर ध्यान रखना। सद्भाव को भूल जाना। जो तुम्हारे पास है, उसकी फिक्र न करो, जो नहीं है उसकी चिन्ता करो। जो है, उसे नजरअंदाज कर दो और जो नहीं है उसके पीछे भागो। जिसके तुम मालिक हो उसे भूल जाओ, जिसका पड़ोसी मालिक है उसका सतत् ख्याल रखो, उसे पकड़ने का, अपना बनाने का सतत् प्रयास करो। अतीत की स्मृतियों या भविष्य के सपनों में खोये रहो।

सुख का उपाय है सद्भाव की जिन्दगी जीना, जो है उसका आनंद लेना। जितना है उतने में संतोष रखना। जो मिला खा लिया, कल की फिक्र न रखना। जो नहीं है उसकी चिन्ता न करना, वर्तमान में जीना।

हर इंसान दुःखी है, क्योंकि वह अभाव में जीता है, वह अभाव की जिन्दगी जीने का आदी है। जो तुम्हारे पास होता है तुम उसकी परवाह नहीं करते। उसके प्रति लापरवाह बन जाते हो। लेकिन जो तुम्हारे पास नहीं होता उसके पीछे भागते हो, उसे पाने के लिए दिन रात एक कर देते हो, तुम्हारी रातों की नींद खो जाती है, दिन का अमन–चैन खो जाता है और तुम्हें जब अभीष्ट वस्तु नहीं मिलती तब तुम हताश हो जाते हो, निराश हो जाते हो, दुःखी हो जाते हो।

दुःख का मूल कारण तुम्हारी आकांक्षा है। दुःख कहीं बाहर से नहीं आता। वह तुम्हारी कामना से आता है, वह तुम्हारी कल्पना से आता है, वह तुम्हारी वासना से आता है, वह तुम्हारी अभीप्सा से आता है, वह तुम्हारे चित्त से आता है।

सुख का उद्गम स्थल भी तुम ही हो, तुम्हारा मन ही है। जहाँ चित्त शांत हुआ वहीं सुख का अमृत स्रोत फूट पड़ता है। जहाँ इच्छाएं–वासनाएं मरी, वहीं आनंद का सागर हिलोरें मारने लगता है। जहाँ आकांक्षा–अभीप्सा का दफन हुआ वहीं सुख का सूरज चमकने लगता है।

सुख कभी आकाश से नहीं टपकता और न ही पाताल से प्रकट होता है। वह तो आत्मा से प्रादुर्भूत सहज उपलब्धि है। सुख का आधार सत्ता नहीं, सत्य है। नीत्से ने सुख का आधार सत्ता को माना। फ्रायड की दृष्टि में सुख का मूल कारण काम है। मार्क्स का अभिमत है कि अर्थ के अभाव में सत्ता और काम दोनों आकिंचित्कर हैं। इस संदर्भ में भगवान महावीर ने कहा – सुख न सत्ता में है, न काम में और न अर्थ में। सुख तो आत्मा में है, अपने आप में है। जैसे फूल की सुगन्ध फूल में है, शक्कर की मिठास शक्कर में है, दीपक का प्रकाश दीपक में है वैसे ही आत्मा का सुख आत्मा में है। आत्मा आनंद का अनंत सागर है। सुख का अक्षय भण्डार है। निराकुलता व शान्ति का असीम कोष है।

लेकिन आज परिस्थितियां इससे एकदम विपरीत हैं। मैं लोगों के चेहरे को देखता हूँ, उनके अंतरंग में झांकता हूँ, उनकी आँखों में झांकता हूँ तो मुझे मासूमियत नजर आती है, एक बेचैनी, एक कड़वापन, एक तीखापन अनुभव करता हूँ। एक अंतहीन व्यथा–कथा सुनता हूँ। एक टीस सुनाई देती है। जो जीवन आनंद का कोष है वह आज दुःख / पीड़ा का महासागर बन गया है। क्यों ? क्योंकि मनुष्य अभाव में जी रहा है। जो उसके पास है उसका आनंद नहीं उठाता। हां, जो नहीं है, उसके पीछे हमेशा भागता है, जो अनुपलब्ध है, उसका दुःख सदा भोगता है।

उदाहरण के तौर पर तुम्हारी जेब में 90 रुपये हैं तो तुम इस फिराक में रहते हो कि 10 रुपये और आ जाएं ताकि पूरे 100 रुपये हो जाएं। तुम 90 रुपये का सुख नहीं भोगते हो लेकिन 10 रुपये का दुःख सदा भोगते रहते हो। तुम्हारी दृष्टि में 90 रुपये का कोई मूल्य नहीं है, मूल्य है 10 रुपये का। जो तुम्हारे पास है उसमें तुम्हें रस नहीं आता लेकिन

जो नहीं है उसमें बड़ा रस आता है। वह बड़ा सुखद प्रतीत होता है, प्रीतिकर लगता है। तुम 90 रुपये का आनंद नहीं उठा पाते, 10 रुपये का दुःख जरूर पैदा कर लेते हो।

अब तुम लगे दौड़ने कि कैसे 100 रुपये हो जाएं। वह दस तुम्हें बहुत दौडाते हैं, बहुत भगाते हैं और आश्चर्य तो यह है कि तुम दौड़ते हो, भागते हो, यह जानते हुए भी कि यह कभी न पूर्ण होने वाली मृग–मरीचिका है। मृग–तृष्णा है। और मान लो पूरे 100 हो जाते हैं तो मन कहता है कि 100 रुपये में काम नहीं चलेगा। हजार रुपये होने चाहिए।

मन की आदत है। पुरानी आदत है कि वह हमेशा नया मांगता है। आप भोजन करने बैठे हैं, पहले ग्रास में जो आनंद आता है, वह आनंद दूसरे ग्रास में नहीं आता है, जो दूसरे में आता है वह तीसरे में नहीं आता है। मन पुनरुक्ति नहीं मांगता। मन नए के प्रति आकर्षित होता है। मन नए की ओर भागता है। मनुष्य का मन कुत्ते के समान है। मन श्वान की तरह भटकता है। श्वान अपना अभीष्ट पदार्थ ढूंढ़ता है और मिल जाने पर उसे सूंघता है और आगे बढ़ जाता है। मन का स्वभाव है कि उसे जो मिल जाता है उसके लिए वह अर्थहीन हो जाता है। जो नहीं मिलता, उसके पीछे भागता है। उपलब्धि में उसे रस नहीं आता, अभाव में रस होगा, वह इस प्रकार की भ्रान्त धारणा में जीता है।

तो अब हजार रुपये की वासना जाग गई, हजार होने चाहिए। सौ का सुख तो नहीं उठाया, हजार का दुःख जरूर पैदा कर लिया। फिर कशमकश शुरू, फिर गधा–मजूरी शुरू, फिर कोल्हू के बैल की जिन्दगी शुरू। फिर वही दौड़–धूप, वही उठा–पटक शुरू हो गई। फिर रातों की नींद और दिन का अमन–चैन खो गया, फिर कमर–तोड़ मशक्कत शुरू हो गई, क्योंकि पूरे हजार करने हैं और हजार के लिए ये सारे खट्कर्म जरूरी हैं, नहीं तो हजार कैसे होंगे? तो हजार के लिए महाभारत शुरू हो गया। मन कहता है बस हजार रुपये मिल जाएं मैं शान्त हो जाऊंगा, मैं चुपचाप बैठ जाऊंगा, निश्चिंत हो जाऊंगा। लेकिन निश्चिंत कहां हो पाता है। हजार के होने पर मन लाख की चिन्ता से भर जाता है। लाख रुपये हों, तो ही आराम की जिन्दगी जी सकता हूँ। यह भावना मन के किसी कोने में घर कर जाती है। मन संतुष्ट कब होता है? मन तृप्त कहां हो पाता है वह तो सदा अतृप्त बना रहता है क्योंकि मन अनंत है, इच्छाएं असीम हैं, कामनाएं अनगिनत हैं, आकांक्षाएं असंख्य हैं। एक इच्छा की पूर्ति करो तो चार नई जागृत हो जाती हैं। तो इच्छा ही दुःख है। मन की चाह ही दुःख है। दुःख से मुक्त होना है तो आकाश के समान अनंत इच्छाओं पर नियंत्रण रखना निहायत जरूरी है। मन पर काबू रखना, चित्त की वृत्तियों पर नियंत्रण अत्यन्त जरूरी है।

दुःख आवश्यकता में नहीं, आकांक्षा में है क्योंकि आवश्यकता सीमित होती है, जीवन बसर के लिए जरूरी भी होती है। लेकिन आकांक्षा असीम होती है और अनावश्यक भी भगवान महावीर कहते हैं कि आवश्यकता की पूर्ति तो संभव है लेकिन आकांक्षा की नहीं।

आकांक्षा एक झूठी आवश्यकता है। आकांक्षा एक सपना है। सपने को परिपूर्ण नहीं किया जा सकता क्योंकि सपने की जड़ें न धरती में होती हैं और न ही पाताल में। मन स्वयं एक स्वप्नमयी घटना है। आवश्यकता शरीर से जुड़ी होती है, जबकि आकांक्षा मन से। शरीर की आवश्यकता भोजन है, पेट भोजन मांगता है, रोटी मांगता है लेकिन मन कहता है केवल रोटी से काम नहीं चलेगा। रोटी गरम–गरम होनी चाहिए, साथ ही साथ नरम–नरम भी होनी चाहिए और हां गरम–गरम और नरम–नरम के साथ ही साथ तरम–तरम (घी युक्त) भी होनी चाहिए। पेट केवल रोटी मांगता है लेकिन मन उसमें विशेषण लगा देता है। पेट कहता है भूख लग रही है, रोटी दो, तो मन कहता है– नहीं, रोटी नहीं परांठे लाओ, परांठे मिल जाएं तो कहता है कि पूड़ी लाओ, परमपूडी लाओ। तो मन आकांक्षा में जीता है और महावीर कहते हैं कि आकांक्षा ही दुःख का कारण है।

तो हजार रुपये होने पर मन लाख की आकांक्षा से भर जाता है। वह सोचता है जब हजार हो सकते हैं तो लाख क्यों नहीं हो सकते। याद रखना लाभ लोभ का कारण है। जैसे–जैसे लाभ होता है वैसे–वैसे लोभ भी बढ़ता जाता है। आकांक्षा दौडती है, भगाती है, तड़पाती है। देने की आशा दिलाती है, देती तो कुछ नहीं है लेकिन तुम्हारे पास जो कुछ होता है उसे तुमसे छीन और लेती है। लेकिन आशा से बंधा मनुष्य जीवन भर दौड़ता है और जीवन के अन्त में थककर चूर हो जाता है, गिरता और मर जाता है और इसी के साथ जीवन अभिनय का पटाक्षेप हो जाता है।

तो !! सुखी जीवन का राज है– जो तुम्हारे पास है केवल उसका आनंद लो। जो नहीं है, उसकी चिन्ता न करो, उसके पीछे मत भागो, उसका पीछा न करो।

तुम्हारी जेब में 90 रुपये हैं तो उसका आनंद लो, उसका लुत्फ उठाओ दस रुपये के पीछे न पड़ो, सौ करने के चक्कर में मत आओ क्योंकि सौ तो कभी हो ही नहीं सकते। विश्व विजेता सम्राट सिकन्दर भी सौ नहीं कर पाया तो फिर तुम किस खेत की मूली हो। आज तक का इतिहास है – बड़ा से बड़ा सम्राट भी पूरे सौ नहीं कर पाया। वह भी जब मरा तो भिखारियों की तरह मरा, रोता हुआ मरा, याचना करते हुए मरा, हाथ फैलाए हुए मरा। पूरे सौ कभी होते ही नहीं हैं। सौ पूरे होने के पहले ही निन्यानवे का चक्कर शुरू हो जाता है। पूरे

सौ नहीं होते, निन्यानवे ही बने रहते हैं और आदमी की आदत है कि सौ के चक्कर में निन्यानवे को भूल जाता है। यही आदत उसके दुःख का कारण बन जाती है।

तो!! मैं कहता हूँ अगर सुखी होना है तो कभी सौ के चक्कर में मत पड़ना। तुम्हारे पास है उसी में सुख खोजना, सुख उसी में मिलेगा। जो पड़ोसी के पास है उसमें खोजने मत बैठ जाना और मजे की बात तो यही है कि अभी तक सुख को पड़ोसी के यहां खोज रहे हो। तुम्हारा सुख और दुःख पड़ोसी के यहां से पैदा होता है। तुम्हारे पास स्कूटर है और तुम्हारे पडोसी के यहां कार है तो तुम अपने स्कूटर का आनंद तो नहीं उठा पाते हो, लेकिन पड़ोसी की कार तुम्हें सदा बेचैन बनाए रखती है और यहीं से प्रतिस्पर्धा शुरू हो जाती है कि मेरे द्वार पर भी कार होनी चाहिए। यह दुःख पड़ोसी के यहाँ से तुमने जबरन मोल ले लिया। तो यह जबरन मोल लेने की आदत गलत है। संसार बहुत बड़ा है, तुम किस–किस से प्रतिस्पर्धा करोगे , किस–किस बात के लिए प्रतिस्पर्धा करोगे। यहाँ तो एक से बढ़कर एक हैं, नहले पर दहला मारने वाले कई हैं।

जब मैं इन्दौर में था, एक युवक ने पूछा– मुनिश्री! संसार का हर इंसान दुःखी क्यों है? मैंने कहा– क्योंकि उसका पड़ोसी सुखी है। तुम्हारा सुख–दुःख पड़ोसी के दुःखी–सुखी होने से पैदा होता है। तो जो तुम्हारे पास है उसी में जिओ, जो पड़ोसी के पास है उसमें न जिओ।

लेकिन तुम्हारी तो आदत ही पड़ गई है पड़ोसी में जीने की। तुम्हारी पत्नी है वह तुम्हें सुन्दर नहीं लगती, पड़ोसी की पत्नी कुछ ज्यादा ही सुन्दर दिखाई पड़ती है। अंग्रेजी में एक कहावत है जिसका अर्थ है कि दूसरे के बगीचे की घास सदा ज्यादा हरी मालूम होती है। सच है दूसरे का लॉन खूब हरा लगता है, तुम्हारा अपना लॉन इतना हरा नहीं मालूम पड़ता। दूसरे की पत्नी में ज्यादा आकर्षण होता है, स्वयं की पत्नी में नहीं जबकि ऐसा नहीं है कि तुम्हारी पत्नी सुन्दर नहीं है। तुम्हारी पत्नी पड़ोसी की पत्नी से ज्यादा सुन्दर है, खूबसूरत है, लेकिन तुम्हारी आँखें उसके सौन्दर्य को देख कहाँ पाती हैं? तुम्हें तो पड़ोसी की पत्नी में ज्यादा रस आता है।

ऐसा होता क्यों है? क्योंकि मन का स्वभाव है जो उसे मिल जाता है उसके प्रति आकर्षण खो जाता है। पत्नी तो तुम्हारी है, तुम्हारे अधिकार में है, इसलिए मन अपनी पत्नी में ठहर नहीं पाता है। बाहर की ओर भागता है। जो चीज मिल जाती है वह मन के लिए मिट्टी की हो जाती है। जिस स्त्री के पीछे पहले तुम पागल थे, वह मिल गई तो मिट्टी हो गई, उसमें आकर्षण खो गया। मिल जाए तो मिट्टी जैसा, खो जाए तो सोना है। मजनूं को लैला नहीं मिली तो मजनू की दृष्टि में लैला आखिरी दम तक सोना बनी रही। अगर मजनूं को लैला मिल जाती तो बच्चू को मालूम पड़ जाता कि नमक–तेल का भाव क्या होता है? नहीं मिली इसलिए मजनूं की दृष्टि में लैला आखिरी दम तक बहुमूल्य बनी रही, लैला में रस बना रहा, आकर्षण बना रहा। तो मन की मर्जी से मत चलना वरना वह पता नहीं कौन से खाई–खड्डे में पटकेगा। कौन से रसातल में ढकेलेगा, मन तो सदा पटकता है, सर्दियों से पटकता आ रहा है। तो मन की मानना ही मत क्योंकि जो मन की मानता है वह मानी होता है और मनमानी करने लगता है लेकिन जो आत्मा की मानता है वह ज्ञानी बन जाता है और नादानी, बचकानी करना छोड़ देता है। मन की मानना नहीं है और न ही मन को मनाना है अपितु मन के मालिक बनना है, मन से मनवाना है। जिस दिन तुम्हारा मन तुम्हारी मानने लगेगा उसी दिन तुम्हारे जीवन में अमृत के झरने फूट पड़ेंगे। तुम अपने सम्राट बन जाओगे। अभी तो हालत यह है कि तुम मन के गुलाम हो, मन तुम्हें नचाता है और तुम नाचते हो। तो तुम आदमी न होकर एक कठपुतली हो गए, एक खिलौना हो गए, एक मनोरंजन का साधन हो गये।

दुःख का जो दूसरा कारण है वह है तुम्हारा अहंकार, तुम्हारा 'मैं'। मैं परिवार का संरक्षक हूँ। मैं समाज का कर्णधार हूँ। मैं पत्नी और बच्चों का भरण–पोषण कर रहा हूँ। मैं परिवार, समाज व राष्ट्र को चला रहा हूँ। यह जो कर्तापन की झूठी मान्यता है, यही मान्यता तुम्हें दुःखी बनाए हुए है। मेरे बिना दुनिया अस्त–व्यस्त हो जाएगी – ऐसा अहंकार तुम्हें दुःखी बना रहा है।

आदमी भ्रम में जी रहा है, गलतफहमी में जी रहा है, भ्रान्त धारणाओं में जी रहा है। वह इस ख्याल में जी रहा है कि अगर वह नहीं होगा तो परिवार के सदस्य, बीवी–बच्चे दाने–दाने के लिए तरस जायेंगे, समाज बिखर जाएगा, राष्ट्र की उन्नति अवरुद्ध हो जायेगी। अरे भाई! तू किसी का जीवनाधार नहीं है, पत्नी अपने पुण्य से जी रही है। बच्चा अपने पुण्य से जीता है। बालक के जन्म लेते ही माँ के स्तन में दूध आ जाता है। वह दूध कहाँ से आया? आने वाला जीव अपनी व्यवस्था स्वयं करके आता है।

मैंने सुना है जो छिपकली होती है वो मकान पर, मकान की छत पर उल्टी लटकी रहती है। पता है वह उल्टी क्यों लटकी रहती है? क्योंकि उसको ख्याल है कि मकान उसके सहारे थमा है, अगर वह हट गई तो मकान गिर जाएगा।

पूछ लेना किसी भी छिपकली से वह यही कहती पाई जाएगी कि अगर हम हट गए तो मकान गिर जाएगा। मैं समझता हूँ तुम्हारा भ्रम और छिपकली का भ्रम लगभग एक सा ही है। वह छिपकली और कोई नहीं, तुम ही हो, तुम्हारा भ्रम ही है।

सुना होगा, मुर्गे को, वे यही सोचते हैं कि सुबह हम बांग देते हैं इसीलिए सूरज उगता है।

एक गाँव में एक आदमी था, उसके पास एक मुर्गा था। वह सारे गाँव को डराता कि देखो मुझसे कभी झगड़ा मत करना, मेरी कभी अवज्ञा मत करना, वरना मैं अपने मुर्गे को लेकर दूसरे गाँव चला जाऊंगा और फिर जब मेरा मुर्गा नहीं रहेगा तो बांग कौन देगा और जब कोई बांग नहीं देगा तो सूरज कहां से उगेगा। गाँव के लोग उससे डरते थे। इससे उसका उत्पात कुछ ज्यादा ही बढ़ गया था।

एक दिन अति हो गई। गाँव के लोगों ने उससे झगड़ा कर लिया, उसकी पिटाई कर दी। उसने कहा– मरो अब अंधेरे में, सड़ो, ये चले हम अपने मुर्गे को लेकर दूसरे गाँव। याद रखना अब इस गाँव में कभी सूरज नहीं निकलेगा और वह आदमी अपने मुर्गे को लेकर दूसरे गाँव चला गया। दूसरे गाँव में उसके मुर्गे ने बांग दी, सूरज उगा। उसने हँसते हुए कहा– उस गाँव के लोग अब अंधेरे में सिर पीट रहे होंगे, रो रहे होंगे अपनी किस्मत पर। अरे! सूरज उस गाँव में उगता है जिस गाँव में मेरा मुर्गा बांग देता है। मैं समझता हूँ, मुर्गे के मालिक का भ्रम और तुम्हारा भ्रम लगभग एक जैसा ही है।

मैंने सुना है कि एक कुत्ता गाड़ी के नीचे–नीचे चल रहा था, सामने से एक दूसरा कुत्ता आ रहा था। उसने पूछा – भाई! गाड़ी के नीचे कैसे? उस कुत्ते ने गर्व से कहा – देखते नहीं, गाड़ी मैं चला रहा हूँ। दूसरे कुत्ते ने कहा – रहने दो, ज्यादा मत फेंको। गाड़ी को तो ये बैल खींच रहे हैं। तो उस कुत्ते ने कहा – नहीं, मैं खींच रहा हूँ, अगर मैं रुक गया तो गाड़ी भी रुक जाएगी। दूसरा कुत्ता बोला– अच्छा तुम रुक जाओ। और वह कुत्ता रुक गया, इत्तफाक की बात कि बैल भी रुक गए, गाड़ी भी रुक गई तो उस कुत्ते ने कहा– देखा मेरा करिश्मा, अब तो समझ में पड़ी।

दूसरा कुत्ता बोला– तुम्हारे रुकने से गाड़ी नहीं रुकी है, बैलों के रुकने से रुकी है। तब वह कुत्ता बोला– अगर मैं चल दूं तो गाड़ी भी चल देगी। उसने कहा– अच्छा तुम चलो। और वह कुत्ता ज्यों ही चला, संयोग की बात उसी समय बैल भी चल दिए, गाड़ी आगे बढ़ने लगी। चलते हुए कुत्ते ने ऐंठते हुए कहा– देखा, अब तो मानोगे कि गाड़ी को मैं ले जा रहा हूँ।

मित्रों! तुम भी इसी भ्रम में जी रहे हो। तुमने भी तो यही भ्रम पाल रखा है कि इस गृहस्थी की गाड़ी को मैं ढो रहा हूँ, यह व्यर्थ का भार है, यह व्यर्थ का बोझ है। 'मैं और मेरा' की जो वासना है वह तुम्हें दीन बनाए हुए है। महावीर कहते हैं कि जब तक 'मैं' की अकड़ है तब तक दुःख है। मैं की मृत्यु ही आत्मा का जीवन है। दुःख से मुक्ति चाहते हो तो अहम् का परित्याग परम अनिवार्य है। सहज जीवन जीना सीखें। जगत में साक्षीमात्र बनकर रहें।

मुझसे लोग पूछते हैं– मुनिश्री! अहंकार कैसे छोड़ें?

मैं कहता हूँ– जब तक 'मेरा' नहीं छूटेगा तब तक 'मैं' नहीं छूट सकता क्योंकि 'मेरा' ही 'मैं' को अहंकार देता है। अहंकार का भजन 'मेरा' है, 'मैं' का भोजन मेरापन है, तो यह जो मैं है, यही 'मैं' तुम्हें मृत्यु की ओर ढकेलता है।

हर आदमी कहता है– आई वांट पीस।

इसमें 'आई' और 'वांट' दोनों हैं। जहाँ आई (मैं और अहम्) और वांट (इच्छा, तृष्णा) दोनों हों, वहाँ पीस (शान्ति) कैसे रह सकती है अर्थात् जहाँ अहम् और तृष्णा होगी वहाँ नियमतः दुःख ही होगा। मैं कहता हूँ 'आई वांट पीस' में से यदि आई और वांट निकाल दें तो सहज ही पीस (शान्ति) रह जाएगी। जीवन शान्ति सदन बन चुकेगा।

अहंकार दुःख है, अहंकार रोग है, अहंकार पीड़ा है, अहंकार नर्क है, अहंकार ठग है, अहंकार मीठा बदमाश है जो तुम्हें हर पल ठग रहा है। तुम अपने लिए थोड़े ही न जीते हो, दूसरों के लिए जीते हो, प्रदर्शन में जीते हो, जो तुम वास्तव में होते हो वह तो प्रकट रूप में किसी को दिखाते नहीं हो लेकिन जो तुम बिल्कुल नहीं होते उसे दिखाने का प्रदर्शन जरूर करते हो।

ख्याल करो तुम चौबीस घंटे में कितने चेहरे बदलते हो, चौबीस घंटे में चौबीस से भी ज्यादा चेहरे बदल लेते हो। तुम्हारे दो प्रकार के चेहरे हैं, एक प्राइवेट फेसेज, दूसरा पब्लिक फेसेज। जो व्यक्तिगत चेहरा होता है, प्राइवेट फेस होता है उसे तुम कभी सार्वजनिक स्थान पर नहीं ले जाते। अभी आपका जो चेहरा मैं देख रहा हूँ वह डुप्लीकेट है, ओरिजनल फेस नहीं है, असली चेहरा नहीं है। असली चेहरा तो आप कभी किसी को दिखाते ही नहीं हो। आपके चेहरों पर चेहरे हैं और बहुत–बहुत गहरे हैं, अनंत चेहरे हैं, अनगिनत मुखौटे हैं।

आदमी प्याज की तरह हो गया है। एक छिलका निकालो, फिर छिलका आ जाता है, फिर छिलका निकालो तीसरा छिलका आ जाता है, चौथा छिलका आ जाता है। प्याज में केवल छिलके ही छिलके हैं। प्याज का अपना कोई अस्तित्व नहीं है। छिलकों का जोड़ ही प्याज है और चेहरों का जोड़ ही आपका जीवन है। एक चेहरा उतारो तो दूसरा चेहरा प्रकट हो जाता है।

तुम चेहरे बदलने में, रंग बदलने में बड़े होशियार हो ! बड़ी तेजी से चेहरे बदल लेते हो। तुम पत्नी के सामने कुछ होते हो और मित्र के सामने कुछ। बच्चों के सामने कुछ होते हो और ग्राहकों के सामने कुछ। मालिक के सामने कुछ होते हो और नौकर के सामने कुछ। अगर तुम्हारे एक तरफ मालिक को और दूसरी तरफ नौकर को बिठा दिया जाए तो तुम्हारे दो

चेहरे होंगे। इधर नौकर की तरफ एक चेहरा नौकर को डांटते हुए का होगा तो उधर मालिक की तरफ दूसरा चेहरा पूंछ हिलाते हुए का होगा।

आदमी दोहरा जीवन जी रहा है। मंदिर के और मंडी के जीवन में कोई सामंजस्य नहीं है। तुम जो मंदिर में रहते हो वह मंडी में कहाँ रह पाते हो। मंदिर की सरलता मंदिर में ही खो जाती है। मंदिर का जीवन मंदिर की सीढ़ियों तक ही सीमित रहता है।

मंदिर में जो लोग पूजा करते दिखें उन्हें एकदम से धार्मिक मत समझ लेना। उन्हें मुमुक्षु मत मान लेना। जरा उनके अंतरंग में झांककर देखना कि उनकी पूजा का लक्ष्य क्या है? भक्ति का उद्देश्य क्या है? तुम पाओगे कि कोई भगवान से औलाद मांग रहा है। कोई दुकान चल निकलने की तरकीब पूछ रहा है, कोई अपने पति का रोना रो रही है तो कोई कोर्ट कचहरी का केस सुलझाने के मूड में है। सबके अपने–अपने अभीष्ट होंगे और सभी अभीष्ट लौकिक/भौतिक/सांसारिक होंगे। शायद मोक्ष किसी का अभीष्ट नहीं होगा। सुनोगे कि मोक्ष की याचना की जा रही है, मोक्ष के लिए प्रार्थना हो रही है पर मोक्ष से किसी का कुछ मतलब नहीं है. कुछ वास्ता नहीं है।

एक आदमी था। वह रोज–रोज भगवान के मंदिर में जाता और प्रार्थना करता– प्रभु! बड़ा दुःखी हूँ, दुःख से मुक्ति दिला। मुझे मोक्ष चाहिए, मोक्ष दिला दो। एक दिन भगवान भी परेशान हो गये क्योंकि रोज सुबह–सुबह पहुँच जाता और गिड़गिडाता कि मैं दुःखी हूँ, दुःख से मुक्ति दिला दो, मुझे मोक्ष चाहिए, मोक्ष दिला दो। तो उस दिन भगवान प्रकट हो गये और बोले– तुझे मुक्ति चाहिए तो लो, इसी वक्त लो, यह खड़ा है विमान, बैठ और चल मोक्ष।

उस आदमी ने कहा– अभी, एकदम अभी कैसे हो सकता है? भगवान! अभी मेरा लड़का छोटा है। जरा जवान हो जाए, उसकी शादी कर दूं, फिर चलूंगा।

भगवान ने कहा– फिर मुझे रोज–रोज परेशान क्यों करता है? सुबह से रोज चिल्लाना शुरू कर देता है, सुख से सोने भी नहीं देता है। अगर मोक्ष नहीं चाहिए तो क्यों व्यर्थ में परेशान करता है?

उसने कहा– भगवन्, किसने कहा मोक्ष नहीं चाहिए, चाहिए, जरूर चाहिए लेकिन अभी नहीं, फिर कभी, आप आश्वासन दे दें। मेरा लड़का बड़ा हो जाए, मैं उसकी शादी कर दें। क्योंकि मेरे बिना उसकी शादी कौन करेगा? भगवान ने आश्वासन दिया और तथास्तु कहकर अन्तर्ध्यान हो गए।

भगवान वापस चले गए। फिर लड़के की शादी हो गई। वह शादी करके लौटा ही था कि भगवान प्रकट हो गये और बोले– तेरे लड़के की शादी हो गई है, अब चलो मोक्ष! मैं लेने आ गया हूँ। उसने कहा– आप भी बड़ी जल्दी मचाए हुए हैं। अभी शादी करके आया ही हूँ और आप आ गए। कम से कम उसका एक बच्चा हो जाए, उसका मुख देख लूं, उसे खिला लूं, फिर बिल्कुल तैयार हूँ।

भगवान फिर वापस चले गए। फिर उसके लड़के के भी लड़का हो गया और स्कूल भी जाने लगा है? तो भगवान फिर एक दिन प्रकट हो गए और कहा– भक्तराज! अब क्या विचार है?

बूढ़े ने झुंझलाते हुए कहा– आप तो मेरे पीछे ही पड़ गए। क्या और कोई नहीं मिलता आपको! खबरदार! अब मेरे द्वार पर आए तो खैर नहीं, चले जाओ यहाँ से। और उस बूढ़े ने धक्का मारकर भगवान को निकाल दिया। भगवान ने जाते–जाते पूछा– जब तुझे मोक्ष नहीं चाहिए, दुःख से मुक्ति नहीं चाहिए तो मुझे परेशान क्यों करता है? मोक्ष क्यों मांगता है? तो उस बूढ़े ने कहा– देखिए भगवान! वह तो मेरी पुरानी आदत है। आदतन बोलता हूँ। मुझे कोई मतलब नहीं तुम्हारे मोक्ष से और हाँ, एक बात और सुन लो, कल सुबह फिर आऊंगा और कहूंगा कि मुझे मोक्ष दे लेकिन तुम्हें प्रकट होने की जरूरत नहीं है।

मैं समझता हूँ हर आदमी की यह आदत है, हर तथाकथित धार्मिक की यह तस्वीर है। मंदिर जाते–जाते आदमी की उम्र ढल जाती है, लेकिन परमात्मा से साक्षात्कार नहीं कर पाता। क्यों? क्योंकि खुद तो परमात्मा के अनुरूप नहीं हो पाता है और परमात्मा को भी वह अपने गज से नापता है, परमात्मा को भी वह अपने बांटों से तौलता है। परमात्मा के दरबार में भी पदार्थ की याचना करता है। पूजा का लक्ष्य पदार्थ नहीं, परमात्मा होना चाहिए।

मित्रों! सुखी जीवन का राज सिर्फ इतना–सा है कि हम अभाव में नहीं, सद्भाव में जिएं। कर्तापन के बोझ को अपने सिर से उतार फेंकें और अहंकारशून्य, सच्चाईपूर्ण जीवन यापन करें। प्रदर्शन से बचें और अध्यात्म की दिशा में गतिशील हों। जीवन में तर्क को प्रश्रय न दें क्योंकि जहाँ तर्क है, वहाँ नर्क है। वहाँ संघर्ष है, विवाद है, दुःख है, पीडा है। जहाँ समर्पण है वहाँ स्वर्ग है, प्रेम है, संवाद है, सौहार्द है।

अगर दुःख से मुक्त होना है तो जीवन को अर्थ देना होगा और अर्थ को जीवन। जिन्दगी तो हिम्मत का सौदा है, पुरुषार्थ करो, सफलताएं अवश्य मिलेंगी। याद रखिये सद्भाव ही स्वर्ग है और अभाव ही नर्क है। संतोष ही जीवन है और तृष्णा ही मृत्यु है।

–मुनिश्री तरूण सागर जी की पुस्तक
'दुःख से मुक्ति कैसे मिले?' से साभार

पत्रिका सहायता

★ **श्री विजेन्द्र कुमार जी जैन,** 5क 203/204, शिवानी पार्क, अलवर ने अपने सुपुत्र गौरव जैन एवं पुत्रवधू पूजा जैन की 9 फरवरी को वैवाहिक वर्षगांठ पर पत्रिका सहायता हेतु रु. 501/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी–2464)*

★ **श्रीमती रेणु जी जैन एवं श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन,** बी–54, कीर्ति नगर, टोंक रोड, जयपुर ने अपनी सुपुत्री सौ.कां. मैत्री जैन के दिनांक 17.1.2021 को सम्पन्न विवाहोपलक्ष पर रु. 500/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी–2460)*

★ **श्री शीतल प्रसाद जी जैन** पुत्र श्री उम्मेदी लाल जैन, अलवर ने अपनी सुपुत्री सौ.कां. सलोनी संग चि. गौरव जैन पुत्र श्री विजय कुमार जी जैन, अलवर के शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 500/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी–2506)*

★ **श्री प्रदीप कुमार जी जैन एवं श्रीमती बीना जी जैन** ने अपने पुत्र स्व. श्री रजत जैन (ए.ई.एन.) की तृतीय पुण्यतिथि पर उनकी स्मृति में रु. 1100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी–2489)*

पत्रिका सदस्यता

3106. Sh. Antesh Ji Jain S/o Sh. Jagdish Prasad Jain, 361, Jain Nagar Khera] Sayyad Wali Gali, Near Mahadev Temple, Firozabad-283203, Mob.: 90454730849 *(CR D-2458)*

3107. Sh. Anil Kumar Ji Jain S/o Late Sh. Anoop Chand Jain, C-3, Kaidar Nagar, Shahganj, Agra-282010, Mob.: 9837020651 *(CR D-2461)*

3108. Sh. Shubham Ji Jain S/o Sh. Mukesh Kumar Jain, 280, Rajendra Nagar, Bharatpur-321001, Mob.: 9462120728 *(CR D-2462)*

3109. Sh. Anil Kumar Ji Jain, 26-D, Indra Colony, Mala Road, Kota Junction-324002, Mob.: 9468835048 *(CR D-2466)*

3110. Sh. Pawan Kumar Ji Jain S/o Sh. Khubchand Ji Jain, 77, Alkapuri, Pratap Nagar, Opp. Canara Bank, Agra *(CR D-2505)*

3111. Sh. Ashok Kumar Adish Jain, 17/205, Chandra Bhawan, Opp. Neelkanth Mahadev Mandir, City Station Road, Agra-282003 *(CR D-2488)*

3112. Sh. Ravinder Kumar Jain, 23/99, Loha Mandi, Agra-282002 *(CR D-2492)*

महासभा सहायता

★ **श्री शीतल प्रसाद जी जैन** पुत्र श्री उम्मेदी लाल जैन, अलवर ने अपनी सुपुत्री सौ.कां. सलोनी संग चि. गौरव जैन पुत्र श्री विजय कुमार जी जैन, अलवर के शुभ विवाहोपलक्ष पर महासभा सहायता हेतु रु. 500/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4899)*

★ **श्री पवन कुमार जी जैन,** बी–37, वैशाली नगर, जयपुर ने अपनी सेवानिवृत्ति (दि. 28.02.2021) पर महासभा सहायता हेतु रु. 1,100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4900)*

★ **श्री अनुराग जी जैन** पुत्र श्री वी.के. जैन, 31, सत्यम बंगला, एस.जी. रोड, अहमदाबाद–15 ने महासभा सहायता हेतु रु. 1,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4955)*

गुणों की खोज

भौतिकता की चकाचौंध में आज का इंसान इस तरह अंधी दौड़ में दौड़ रहा है कि उसे स्वयं के बारे में सोचने की फुर्सत नहीं है कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं और कहां जाना है। मैं क्या कर रहा हूं और मुझे मेरे लिये क्या करना चाहिये। क्या करने योग्य है और क्या करने योग्य नहीं है। किस प्रकार से कुछ सही राह मिल सकती है तो संत और भगवंत के चरण सान्निध्य से ही मिल सकती है। लोगों को भौतिकता से मोड़कर आध्यात्मिकता की ओर ले जाने के लिये हमेशा संतों के समाज को आकर्षित किया है।

एक काफिला सफर के दौरान अंधेरी सुरंग से गुजर रहा था। उनके पैरों में कंकरिया चुभी, कुछ लोगों ने इस ख्याल से कि किसी को चुभ न जाये, नेकी की खातिर उठाकर जेब में रख ली, कुछ ने ज्यादा उठाई और कुछ ने कम। जब अंधेरी सुरंग से बाहर आये तो देखा कि हीरे थे। जिन्होंने कम उठाये तो पछताये कि ज्यादा क्यों नहीं उठाये। जिन्होंने नहीं उठाये वो तो और भी ज्यादा पछताऐ।

दुनिया में जिन्दगी की मिसाल भी इस अंधेरी सुरंग जैसी है और नेकी यहां कंकरियों की तरह हैं। इस जिन्दगी में जो नेकी की वो आखिर में हीरे की तरह कीमती होगी और इंसान तरसेगा कि और नेकी ज्यादा क्यों नहीं की।''

–भावना जैन (अध्यापिका)
'मातृ–कृपा' आ.के. कॉलोनी, भीलवाड़ा

गलतियाँ न करें, सजग जीवन जिएँ

जिंदगी में अक्सर जाने–अनजाने या स्वभाववश गलतियाँ हो जाती हैं और फिर उनका परिणाम भी हमें भुगतना पड़ता है। हमसे हो जाने वाली गलतियों का एहसास होने पर सबसे अधिक मन दुःखी होता है और उन्हें सुधारने की कोशिश में लग जाता है, लेकिन कभी–कभी गलतियों को सुधारना इतना आसान नहीं होता और इसलिए इन गलतियों के लिए मन में पछतावा बना रहता है।

प्रश्न उठता है कि ये गलतियाँ हमसे कैसे और कहाँ से हो जाती हैं? मन या मस्तिष्क की क्रियाविधि से या फिर कुछ बोलने से। अक्सर कुछ गलत कहने या करने के तुरंत बाद यह एहसास होने लगता है कि अब क्या होगा? इसे कैसे ठीक करें? क्योंकि हम जो कुछ भी कहते या करते हैं, उसकी न्यूनाधिक प्रतिक्रिया होती ही है।

एक शोध अध्ययन के अनुसार– बातचीत के दौरान; खासकर अपने साथ काम करने वाले लोगों के साथ नकारात्मक भावनाओं का इस्तेमाल सबसे अधिक घातक होता है। सामान्यतया किसी भी व्यक्ति को गलत या सही के मापदंडों पर नहीं तौला जा सकता; क्योंकि कभी–कभी होता यह है कि व्यक्ति कहना कुछ चाहता है और जो कहता है, उसका मतलब कुछ और हो जाता है। यदि व्यक्ति द्वारा कही गई बातों का गलत मतलब निकलता है तो इसका प्रभाव नकारात्मक पड़ता है।

प्रायः जिंदगी में छोटी–बड़ी गलतियाँ हर किसी से हो जाती हैं। एक अध्ययन के अनुसार, 58 फीसदी लोगों का यह मानना है कि वे दिन में एक से अधिक बार जाने–अनजाने कुछ गलत कह दिया कर देते हैं। 22 प्रतिशत लोग गलतियाँ करने के तुरंत बाद पछताने लगते हैं और किसी तरह से बात बनाने की कोशिश करते हैं। केवल 11 प्रतिशत लोगों को बाद में जाकर यह एहसास होता है कि उन्होंने कुछ गलत कर दिया। इसके अतिरिक्त बहुत कम प्रतिशत में ऐसे भी लोग होते हैं, जिन्हें अपने किए पर बिलकुल भी अफसोस नहीं होता है।

आयरिश उपन्यासकार जेम्स जॉयस के अनुसार, गलतियाँ नए आविष्कारों के लिए राहें बनाती हैं। अभी हाल ही की एक घटना है, जिसमें अमेजन वेबसाइट में काम करने वाले एक वरिष्ठ कर्मचारी की वजह से चौबीस घंटे से अधिक नेटवर्क बाधित रहा। उस शख्स ने गलती से नेटवर्क का रूट बदल दिया था अपनी गलती का एहसास होते ही उसने तुरंत मेल करके अपने अधिकारियों को इस बारे में बताया और सुधार में लग गया। इसके साथ ही उसने अपनी गलती के कारण नौकरी छोड़ने की पेशकश भी की, लेकिन कंपनी के समझदार प्रबंधकों ने उसकी त्वरित कार्रवाई की प्रशंसा की और लीडरशिप मीटिंग में भी उस व्यक्ति का जिक्र करते हुए कहा कि गलतियाँ आपको बहुत कुछ सिखाती हैं, हालाँकि गलती करने के बाद आपकी प्रतिक्रिया कैसी होती है, इससे भी बहुत कुछ तय होता है।

मनोवैज्ञानिक सलाहकार डॉ. रॉबर्ट वुड्स के अनुसार, अगर व्यक्ति अपने कार्य के प्रति ईमानदार है, तो वह जान–बूझकर गलतियाँ नहीं करेगा, लेकिन यदि कोई व्यक्ति सोची–समझी गई साजिश के तहत गलतियाँ कर रहा है तो इसके नतीजे भुगतने के लिए उसे तैयार रहना होगा; क्योंकि इसका परिणाम कुछ भी हो सकता है। अनजाने में हुई गलतियाँ चाहे कार्य से संबंधित हों या बातचीत से, उन्हें समय रहते सँभाला जा सकता है।

यदि अनजाने में अपने द्वारा की हुई गलती का एहसास व्यक्ति को होता है तो वह उसके लिए दुःखी होता है और मन से क्षमाप्रार्थी भी होता है। ऐसी परिस्थिति में यह जरूरी है कि वह अपनी गलती को मान ले और विनम्रतापूर्वक अपनी गलती के लिए संबंधित व्यक्ति से क्षमा माँग ले। इससे मन अपराधबोध से मुक्त हो जाता है, लेकिन गलती क्यों हुई, इसके कारणों को जानना और जरूरत पड़े तो बताना भी जरूरी होता है।

गलती करना भी व्यक्ति के लिए महत्त्वपूर्ण हो सकता है, यदि वह अपनी की हुई गलतियों से सबक सीखे और उन्हें ना दोहराने का संकल्प ले। जीवन में जितनी भी तरह की असफलताएँ मिलती हैं, वे सब हमारी गलतियों का ही परिणाम होती हैं। एक गलत कदम हमें अपनी सफलता की मंजिल से कोसों दूर कर सकता है और वहीं एक सफल कदम हमें अपनी मंजिल की ओर ले जा सकता है। सफल वही होता है, जिसने अपनी गलतियों

को दोहराना बंद कर दिया है और अपने कार्य को बिना किसी त्रुटि के किया है। सफलता भी व्यक्ति को तभी मिलती है, जब व्यक्ति अपने कार्य में इतना प्रवीण हो जाता है कि गलतियाँ फिर उससे होती ही नहीं।

कोई भी व्यक्ति जब किसी कार्य को प्रारंभ में सीखने का प्रयास करता है, तो अनगिनत गलतियों को वह करता है और अनजाने में ही उन्हें दोहराता भी है, लेकिन धीरे–धीरे जब वह कार्य को सीखने लगता है तो उसके द्वारा की हुई गलतियों में कमी आने लगती है और अपने कार्य में कुशल होने पर वह गलतियाँ नहीं करता और अगर किसी तरह गलती हो भी जाती है, तो वह उसे तुरंत पहचान लेता है।

देखा जाए तो जो व्यक्ति जितना सजग, होशपूर्ण होता है, वह उतनी ही कम गलतियाँ करता है और जो व्यक्ति जितना अधिक बेहोशी में जीता है, जाग्रत नहीं रहता है, वह उतनी ही अधिक गलतियाँ करता है। जब कोई व्यक्ति नशा करता है तो उसे अपने द्वारा की हुई किसी भी तरह की गलती का एहसास नहीं होता, और उस दौरान वह सबसे अधिक गलतियाँ करता है, लेकिन जब उसी व्यक्ति का नशा दूर होता है तो उसे अपने किए पर सबसे अधिक पछतावा होता है।

सामान्य जीवन में भले ही व्यक्ति नशा न करता हो, लेकिन एक ही तरह का जीवन जीते हुए वह यांत्रिक ढंग से कार्य करने लगता है, उसे होश ही नहीं रहता कि वह क्या कर रहा है? उसे अपने द्वारा किए जाने वाले कार्यों पर ध्यान ही नहीं रहता। वह अपना कार्य करते हुए भी मन से कहीं और रहता है, इसे ही बे–मन से कार्य करना या बेहोशी में कार्य करना कहते हैं और ऐसी स्थिति में व्यक्ति द्वारा की गई गलतियाँ सबसे अधिक होती हैं। अपनी गलतियों को यदि सुधारना है तो सचेत रहने, होशपूर्ण व जाग्रत रहने की जरूरत है।

इसके अतिरिक्त बातचीत करते समय, दूसरों के साथ व्यवहार करते समय भी सजग रहने की जरूरत है; क्योंकि इस दौरान व्यक्ति से अनजाने में ही सबसे अधिक गलतियाँ हो जाती हैं और इसका परिणाम भी उसे लंबे समय तक भोगना पड़ता है। मूर्ख वे हैं, जो बोलने के बाद सोचते हैं और समझदार वे हैं, जो सोचते पहले हैं बोलते बाद में हैं। निश्चित रूप से बोलने से पहले विचार करने पर बातचीत संबंधी गलतियाँ कम–से–कम होती हैं और इससे व्यक्ति की समझदारी का भी पता चलता है। इसके अतिरिक्त स्वभाव में विनम्रता, वाणी में मिठास, क्षमा भाव और जीवन व लक्ष्य के प्रति सजगता हमें हमारी गलतियों से उबरने में मदद करते हैं।

शोक संवेदना

श्री दुलीचंद जी जैन (केसरा वाले), खेरली, जिला अलवर का स्वर्गवास दिनांक 8 मार्च 2021 को हो गया। श्री दुलीचंद जी पत्रिका अर्थसंयोजक श्री महेश चंद जैन के पिताजी थे। वे मिलनसार, धार्मिक व सरल स्वभाव के व्यक्ति थे।

श्रीमती गोमती देवी जी जैन धर्मपत्नी श्री खैमचन्द जैन (डहरा वाले) का दिनांक 10.02.2021 को 68 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। आपने हर समय देव, गुरू, धर्म की शरण रखी। आप जैन रत्न श्राविका मण्डल शाखा नदबई की वर्षों से अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रही थीं। आपकी धार्मिक क्षेत्र, सामाजिक क्षेत्र एवं पारिवारिक क्षेत्र में अनूठी पहचान थी।

श्री सुशील कुमार जी जैन (सेनि. प्रिन्सिपल) सुपुत्र स्व. डा. मंगत सैन जैन निवासी नीलकंठ, सिटी स्टेशन रोड, आगरा का स्वर्गवास दिनांक 7.3.2021 को हो गया। वे मिलनसार व सामाजिक कार्यों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने वाले सरल स्वभाव के व्यक्ति थे।

श्री सत्यप्रकाश जी जैन निवासी जयपुर का स्वर्गवास दिनांक 20 मार्च 2021 को हो गया। वे मिलनसार, धार्मिक व सरल स्वभाव के व्यक्ति थे।

अ.भा.प.जैन महासभा भगवान महावीर स्वामी से दिवंगत आत्माओं की सद्गति की प्रार्थना करते हुए अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करती है।

पूज्य पिताजी स्व. श्री कपूरचन्दजी जैन व माताजी स्व. श्रीमती अंगूरी देवी जैन की
पुण्य स्मृति में

विमल चन्द जैन (रेता वाले)

ग्रुप ऑफ कम्पनीज

DEALERS & SUPPLIERS OF SILICA SAND & OTHER GLASS RAW MATERIAL

AKHIL JAIN (M) 9899823557 • ANKIT JAIN (M) 9837478564

★ The Rajasthan Silica Sand Suppliers

★ Santosh Mineral & Chemical Co.

★ S.B. Jain Mineral Enterprises

★ Super Fine Mineral Traders

★ Shree Vimal Silica Traders

★ Quality Silica Traders

128-129, गणेश नगर,
सेक्टर प्रथम,
पानी की टंकी के सामने,
फिरोजाबाद (उ.प्र.)
सम्पर्क : 098372-53305
090128-74922
05612-260096

समाज के सभी बंधुओं को
होली की

हार्दिक शुभकामनाएं

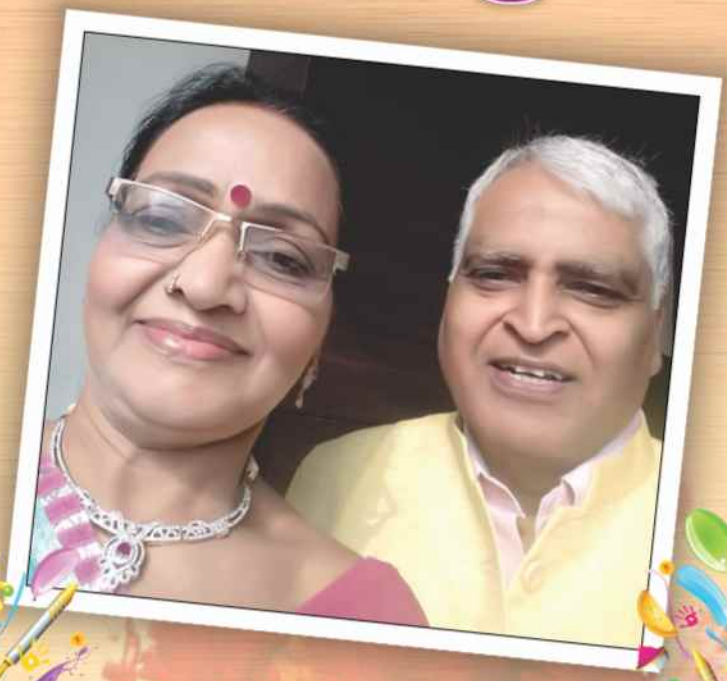

विनोद जैन - शकुन्तला जैन

के-84, शान्ति कुंज, बाल उद्यान मार्ग, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
मोबाईल : 9810822840 / 44
Email : vinodshakun@gmail.com

प्रथम पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

जन्म दिनांक
01 मार्च 1939

देवलोक गमन
21 मार्च 2020

स्व. श्री दयाचन्द्र जी जैन

Retd. B.D.O.

(मूल निवासी खोह-अलवर)

हम सब परिजन आपके प्रेरणादायक जीवन एवं आदर्शों को हृदयस्थ रखते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

श्रृद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
चन्द्र प्रकाश जैन-रजनी जैन
(Ex. En. PWD)
मनीष जैन-आरती जैन
(AEN MCD Delhi)

पौत्री, पौत्र :
रिया, तन्वी,
रोनित, तन्मय

पड़ दोहिती, दोहिते :
अदिश्री, अव्यांश

पुत्री-दामाद :
मन्जू-देवेन्द्र जैन
अर्चना-दिनेश जैन
रेणु-अनिल जैन
निधि-विवेक जैन

दोहिते-दोहिति :
नितिश-दिपाशा
डॉ. निमिषा-डॉ. आधार
अंशुल, समीक्षा, अनुव्रत,
अविजीत, सम्यक

भ्राता :
राजकपूर जैन
विमलचन्द जैन

भतीजे :
धर्मचन्द जैन
राजेन्द्र प्रसाद जैन
सत्यप्रकाश जैन
पंकज कपूर जैन
विजय प्रकाश जैन
विपुल जैन

निवास :
555-बी, स्कीम नं. 2, अलवर
72/29 ए, पटेल मार्ग, मानसरोवर, जयपुर
ए-303, आदित्य गार्डन सिटी, वसुन्धरा, गाजियाबाद
फोन : 9414277153, 9717787673

With Best Compliments From

Authorised Distributor for

- ★ Johnson & Johnson Ltd.
- ★ SD. BIO SENSOR
- ★ Ortho Clinical Diagnostics
- ★ Lifescan-Division, for one touch Brand Glucometers & Strips.
- ★ Biorad Laboratories
- ★ Alere Medical
- ★ Transasia Biomedical Ltd.
- ★ LILAC Medicare

Sanjay Jain - Rajeev Jain

S.R. Enterprises

223, Bichoon Market, Kishanpole Bazar, Jaipur-302 003
Ph.: (O) 2322089, 2323903 (R) 2546017 • Fax : 0141-4022089
(M) +91-98290 12628, 94140 76265

पारिवारिक जीवन में शांति क्यों नहीं ?

नारी अगर चाहे तो घर को स्वर्ग बना सकती है और चाहे तो घर को नरक बना सकती है। यह उसके मानसिक विचारों पर निर्भर करता है। यदि माँ बचपन से ही अपने बच्चों में सेवा, सादगी, श्रम, सहनशीलता, उदारता, आत्मीयता, प्रेम व सहयोग के संस्कार भर दे तो घर परिवार में शांति, सुख व आनन्द का वातावरण बना रहता है अन्यथा अशांति, क्लेश, झगड़ा, मनमुटाव, फूट व तनाव का वातावरण रहता है घर में पैसा है, नौकर है, गाड़ी है, बंगला है, भोग उपभोग की सभी सामग्री है, किसी भी वस्तु का अभाव नहीं है पर फिर भी अशांति है। इसका कारण क्या है? इसके कई कारण हो सकते हैं। प्रेम, सद्भावना, सहयोग, सेवा व आत्मीयता के संस्कारों की कमी, पाश्चात्य सभ्यता व टी.वी. संस्कृति का दुष्प्रभाव, मां–बाप का अंधा प्यार, पैसे का प्रदर्शन, झूठा अहंकार आदि।

पहले माता–पिता बचपन से ही अपने बच्चों को हर परिस्थिति में और सब के साथ समायोजित (एडजेस्ट) होने की शिक्षा देते थे। लड़की को जैसा भी घर–परिवार मिलता था वह उसके अनुरूप अपने आप को ढाल लेती थी। माँ–बाप को यह चिन्ता रहती थी बेटी पराये घर में जाकर हमारा नाम रोशन करें व बदनाम न करें। घर में नौकर व पैसा होते हुए थी लड़कियों को सारा कार्य करना सिखाया जाता था। सबके साथ प्रेम व सहयोग से हिल–मिलकर रहना व मितव्ययता से रहना सीखने का अवसर मिलता था। सगाई होते ही लड़की भी ससुराल को अपना घर समझती थी। पीहर पक्ष से उसका आकर्षण कम हो जाता था। वह मानती थी यही घर अब मेरा अपना घर है मुझे यहीं जीना और मरना है। इस घर की खुशी अब मेरी खुशी है। मेरा पति ही मेरा परमेश्वर है। अब मेरा परिवार ही मेरा सब कुछ है। मुझे पति के हृदय की रानी बनना है, मन जीतना है। अतः वह खुशी–खुशी सारे घर की जिम्मेदारी अपने कंधों पर लेकर प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करती थी। घर में सास–ससुर, देवर, जेठानी, ननद, पति आदि सभी का कार्य करके, सबकी सेवा करके सबकी प्रसन्नता में आनन्द की अनुभूति करती थी।

जहां सम्बंधों में अपनत्व होता है वहां दुःख व थकान नहीं होती। अपने मधुर व प्रेममय व्यवहार से घरवालों से ही नहीं, पड़ोसी, अतिथी, नौकर व मुनीम सभी के साथ आत्मीयता का व्यवहार कर, सबका मन जीतकर सभी के हृदय में अपना स्थान बना लेती थी। वे माता–पिता भी अपने को भाग्यशाली समझते थे जिनकी लाड़ली ससुराल से सुयश लेकर आती। लेकिन आज माता–पिता थोड़ा भी काम करने पर कहते हैं कि मेरी लड़की नौकरानी नहीं है जो दिन–भर घर का काम करेगी।

क्या स्वयं अपने घर का काम करना बुरा है? क्या आपकी बहु आपके घर का काम नहीं करती? क्या आप स्वयं अपने घर का काम नहीं करते? क्यों लड़की के जीवन में विष घोलते हैं? क्यों उन्हें आलसी और नौकरों के भरोसे रहना सिखाते हो? नौकरों के भाव बढ़ गये है वे भी अपनी मनमानी करते हैं क्योंकि हमारे सारे कार्य आज नौकरों के भरोसे होते हैं। इस तरह हमारा समय आलस्य और प्रमाद में बीत जाता है। स्वस्थ्य रहने के लिये डॉक्टर भी मेहनत की सलाह देते है, व्यायाम व घूमने की सलाह देते हैं। अरे पहले से ही घर का काम क्यों नहीं करते? जिससे हम स्वस्थ्य रह सकें, नौकरों की परेशानियों से मुक्त रह सके। हाथो से काम करेंगे तो एक दूसरे के सहयोग की जरूरत होती। सहयोग से प्रेम बढ़ेगा। दिलों की दूरिया कम होगी, एक दूसरे के सुख–दुःख में साथी बनेंगे।

पहले तो सम्मिलित परिवार होते थे। अब तो हमारे छोटे–छोटे परिवार होते है। जिसमें हम प्रेम से नहीं रह सकते। दिन में अपने कमरे में बंद रहना। पहले रात के दस बजे कमरे में जाते और सुबह चार–पांच बजे कमरे से बाहर निकल जाते, पर आज की पीढ़ी का अधिकांश भाग भी कमरे में बीतता है। जिससे दुराव–छिपाव बढ़ा है। कम–से–कम अपने परिवार में तो हमारा जीवन खुली पुस्तक होना चाहिये। भोजन भी अपने कमरे में आकर करते है। घर वालों से क्या छिपाना हैं। हम अपने से दूर रहना चाहते है और परायों से दोस्ती बढ़ाना चाहते हैं। जो हमारा हित चाहते हैं, जो हमें प्यार करते हैं, जो हमारा सुख चाहते हैं उन्हीं से हम दूर भागते हैं। छोटा सा परिवार होते हुये भी एक दूसरा क्या करता है? कहां जाता है? यह हमें पता नहीं। हम अपनी संस्कृति को, अपने रिवाजों को अपनी मर्यादाओं को भूलते जा रहे हैं। इसलिये दुःखी बन रहे हैं।

आने वाली पीढ़ी तो बिल्कुल ही पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंग जायेगी।

भारतीय संस्कृति आदर्श संस्कृति थी। घर की मर्यादायें थी। सम्बंधों में कितनी मिठास थी। घर आये हुये अतिथि का कैसा स्वागत किया जाता था। उनके पास बैठकर मीठी मनुहार से प्रेम पूर्वक खिलाया जाता और अब सगी माँ, बहन, भाई के पास नहीं बैठा जाता। आज की पीढ़ी को लगता है हमारा समय खराब हो रहा है क्योंकि सोच स्वार्थमय हो गयी है। पहले आया हुआ मेहमान सौ–सौ आर्शीवाद देता हुआ प्रेमपूर्वक विदा होता था। आर्शीवाद मांगने से नहीं मिलते यह तो हृदय से निकलते है। पर आज हमारा मानस बदल गया है। भोजन भी अपने हाथ से बनाने की बजाय नौकरों से बनवाने में अथवा घर आये मेहमान को होटलों में ले जाने में अपनी शान समझते हैं। हाथ से बना कर दाल रोटी खिलाने में जो मजा है, जो अपनत्व है वह नौकरों व होटल में बादाम के हलवे में नहीं मिलता। कीमत वस्तु की नहीं होती हृदय से स्नेह की होती है।

आज जमाने को दोष दिया जाता है जमाना ही ऐसा है। आज सभी जगह प्रेम व आत्मीयता का अभाव है। जमाने को बनाने वाला कौन है? हम ही हैं, आज भी हजारों, लाखों परिवार ऐसे मिल जायेंगे जहां, सत्य, समर्पण और सहयोग की भावना है। एक दूसरे में जीते हैं, मरते है। दिन भर मशीन की तरह काम करते हैं। एक–दूसरे का सहयोग व सेवा करते हैं। प्रसन्नतापूर्वक सुख–दुःख में साथ निभाते हैं।

आज हमारी अपनी संस्कृति व भावनायें बदल गयी है संस्कार बदल रहे हैं। स्वछन्दता बढ़ती जा रही है। अहंकार बढ़ रहा है। पारिवारिक और सामाजिक मर्यादायें आज बंधन का रूप लगती हैं। सभी अपनी मर्जी के मालिक बन रहे हैं, जो जिसे अच्छा लगता है वह वही करता है। दूसरों की पसंद–नापसंद का कोई ख्याल नहीं। बालू की भित्ति पर आज हमारा परिवार टिका हुआ है। जरा सी प्रतिकूलता घर एवं परिवार को अशांत व विषमय बना देती है।

सुखी बनना सब चाहते है, अधिकार सब चाहते है आदर–सम्मान व प्रेम सब चाहते है, पर जिन मूल्यों से अधिकार व सुख मिलते है उन त्याग, सेवा, समर्पण को व्यक्ति अपनाना नहीं चाहता। भला अधिकार भी कभी मांगने से मिलते हैं? इसके लिए त्यागमय आदर्श जीवन जीना पड़ता है। दूसरों से हम खूब अपेक्षायें रखते हैं लेकिन स्वयं दूसरों के लिए क्या करते करते हैं? दुनिया भर का सुख मुझे मिल जाए सब मेरा कहना माने, मुझे पूछकर घर का सारा कार्य हो, मैं जैसा चाहुं घर का वातावरण बन जाय। ऐसा आज की पीढ़ी चाहती है लेकिन चाहने से सब कहां मिलता है। हां यदि पूर्व पुण्य कमाया है तो मिल सकता है अथवा वर्तमान में सबके लिये प्यार, सेवा व आत्मीयता रखने से मिल सकता है, हम प्रेम करेंगे, दूसरों की सेवा करेंगे, आदर करेंगे। ताली एक हाथ से कैसे बज सकती है। लेकिन आज हम दूसरों से खूब अपेक्षायें रखते हैं, पर स्वयं दूसरों के लिये कुछ भी करना नहीं चाहते। यही कारण है कि आज मां, बेटे, भाई–बहिन, सास–बहु व पति–पत्नी के पवित्र रिश्तों में कड़वाहट बढ़ गयी। मां से बेटा अलग होना चाहता है। जहां माँ के प्रेम का निर्झर झरना बहता था वह क्यों सूख रहा है। भाई–बहिन के पावन रिश्ते में खटास क्यों पड़ रही है। स्नेह क्यों सूख रहा है? दिलों में दूरियां क्यों बढ़ रही है? इन सबके कारण ढूंढ़िये और उन्हें दूर करने का प्रयास करिये।

–श्रीमती संतोष जैन
102/117, जय पारस, मानसरोवर जयपुर

धन से क्या मिलता है?
धन से शैया खरीदी जा सकती है, नींद नहीं।
धन से पुस्तकें खरीदी जा सकती हैं, ज्ञान नहीं।
धन से भोजन खरीदा जा सकता हैं, भूख नहीं।
धन से दवाएं खरीदी जा सकती हैं, स्वास्थ्य नहीं।
धन से मकान खरीदा जा सकता है, घर नहीं।
धन से विलासिता खरीदी जा सकती है, सभ्यता नहीं।
धन से आमोद-प्रमोद खरीदा जा सकता है, खुशी नहीं।
धन से प्रसाधन सामग्री खरीदी जा सकती है, सुन्दरता नहीं।
धन से देवालय खरीदा जा सकता है, निर्मलता नहीं।
धन से आज्ञाकारी सेवक खरीदा जा सकता है, मित्र नहीं।
धन से सामान खरीदा जा सकता है, समानता नहीं।
धन से विषय सुख खरीदा जा सकता है, प्यार नहीं।
धन से आदमी खरीदे जा सकते हैं, विश्वास नहीं।

-डॉ. कविता जैन
महालक्ष्मीपुरम्, कोटा

भावभीनी श्रद्धांजलि

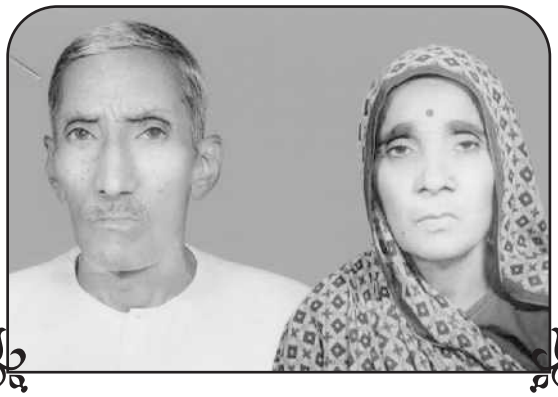

पूजनीय पिताजी स्व. श्री प्यारेलाल जी जैन चौधरी
श्रद्धेय माताजी स्व. श्रीमती असरफी देवी जी जैन
(मूल निवासी - मौजपुर, अलवर)

स्व. श्रीमती इन्दु जी जैन
(धर्मपत्नी श्री पदम चन्द जैन)
(स्वर्गवास : 30.12.2018)

हम सभी परिवार के सदस्य सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये भगवान वीर से उनकी चिर आत्मीय शांति की प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र :
पदम चन्द जैन
पौत्र-पौत्रवधु :
पारस जैन-रश्मि जैन,
पौत्री-दामाद :
डिम्पल-राजेश जैन
सिम्पल-नितिन जैन
प्रिती-उत्तम कोठारी
पड़पोत्री-पौत्र :
चेल्सी जैन-अक्षत जैन

पुत्र :
अनूप चन्द जैन
पौत्र-पौत्रवधु :
हेमन्त जैन-मधु जैन
पौत्री-दामाद :
सुनिता-सुनिल
अनिता-परवेश
विनिता-प्रताप
पड़पौत्र :
रोबीन-मानस

निवास:- बी-52, कीर्ति नगर, टोंक रोड, जयपुर
फोन : 0141-2706317, 9829066317, 9414055855

अनमोल कहानियां

चार आने का हिसाब

बहुत समय पहले की बात है, चंदनपुर का राजा बड़ा प्रतापी था, दूर–दूर तक उसकी समृद्धि की चर्चाएं होती थी, उसके महल में हर एक सुख–सुविधा की वस्तु उपलब्ध थी पर फिर भी अंदर से उसका मन अशांत रहता था। बहुत से विद्वानों से मिला, किसी से कोई हल प्राप्त नहीं हुआ, उसे शांति नहीं मिली।

एक दिन भेष बदल कर राजा अपने राज्य की सैर पर निकला। घूमते–घूमते वह एक खेत के निकट से गुजरा, तभी उसकी नज़र एक किसान पर पड़ी, किसान ने फटे–पुराने वस्त्र धारण कर रखे थे और वह पेड़ की छाँव में बैठ कर भोजन कर रहा था।

किसान के वस्त्र देख राजा के मन में आया कि वह किसान को कुछ स्वर्ण मुद्राएं दे दे ताकि उसके जीवन में कुछ खुशियां आ पायें।

राजा किसान के सम्मुख जा कर बोला– मैं एक राहगीर हूँ, मुझे तुम्हारे खेत पर ये चार स्वर्ण मुद्राएँ गिरी मिलीं, चूँकि यह खेत तुम्हारा है इसलिए ये मुद्राएं तुम ही रख लो।

किसान बोला– ना–ना सेठ जी, ये मुद्राएं मेरी नहीं हैं, इसे आप ही रखें या किसी और को दान कर दें, मुझे इनकी कोई आवश्यकता नहीं।

किसान की यह प्रतिक्रिया राजा को बड़ी अजीब लगी, वह बोला, धन की आवश्यकता किसे नहीं होती भला आप लक्ष्मी को ना कैसे कर सकते हैं ?

सेठ जी, मैं रोज चार आने कमा लेता हूँ, और उतने में ही प्रसन्न रहता हूँ, किसान बोला।

क्या ? आप सिर्फ चार आने की कमाई करते हैं, और उतने में ही प्रसन्न रहते हैं, यह कैसे संभव है!, राजा ने अचरज से पूछा।

सेठ जी, किसान बोला, प्रसन्नता इस बात पर निर्भर नहीं करती की आप कितना कमाते हैं या आपके पास कितना धन है, प्रसन्नता उस धन के प्रयोग पर निर्भर करती है।

तो तुम इन चार आने का क्या–क्या कर लेते हो ?, राजा ने उपहास के लहजे में प्रश्न किया।

किसान भी बेकार की बहस में नहीं पड़ना चाहता था उसने आगे बढ़ते हुए उत्तर दिया, इन चार आनो में से एक मैं कुएं में डाल देता हूँ, दुसरे से कर्ज चुका देता हूँ, तीसरा उधार में दे देता हूँ और चौथा मिटटी में गाड़ देता हूँ।

राजा सोचने लगा, उसे यह उत्तर समझ नहीं आया। वह किसान से इसका अर्थ पूछना चाहता था, पर वो जा चुका था।

राजा ने अगले दिन ही सभा बुलाई और पूरे दरबार में कल की घटना कह सुनाई और सबसे किसान के उस कथन का अर्थ पूछा।

दरबारियों ने अपने–अपने तर्क पेश किये पर कोई भी राजा को संतुष्ट नहीं कर पाया, अंत में किसान को ही दरबार में बुलाने का निर्णय लिया गया।

बहुत खोज–बीन के बाद किसान मिला और उसे कल की सभा में प्रस्तुत होने का निर्देश दिया गया।

राजा ने किसान को उस दिन अपने भेष बदल कर भ्रमण करने के बारे में बताया और सम्मान पूर्वक दरबार में बैठाया।

मैं तुम्हारे उत्तर से प्रभावित हूँ, और तुम्हारे चार आने का हिसाब जानना चाहता हूँ; बताओ, तुम अपने कमाए चार आने किस तरह खर्च करते हो जो तुम इतना प्रसन्न और संतुष्ट रह पाते हो ?, राजा ने प्रश्न किया।

किसान बोला, हुजूर, जैसा की मैंने बताया था, मैं एक आना कुएं में डाल देता हूँ, यानि अपने परिवार के भरण–पोषण में लगा देता हूँ, दुसरे से मैं कर्ज चुकता हूँ, यानि इसे मैं अपने वृद्ध माँ–बाप की सेवा में लगा देता हूँ, तीसरा मैं उधार दे देता हूँ, यानि अपने बच्चों की शिक्षा–दीक्षा में लगा देता हूँ, और चौथा मैं मिटटी में गाड़ देता हूँ, यानि मैं एक पैसे की बचत कर लेता हूँ ताकि समय आने पर मुझे किसी से माँगना ना पड़े और मैं इसे धार्मिक, सामजिक या अन्य आवश्यक कार्यों में लगा सकूँ।

राजा को अब किसान की बात समझ आ चुकी थी। राजा की समस्या का समाधान हो चुका था, वह जान चुका था की यदि उसे प्रसन्न एवं संतुष्ट रहना है तो उसे भी अपने अर्जित किये धन का सही–सही उपयोग करना होगा।

देखा जाए तो पहले की अपेक्षा लोगों की आमदनी बढ़ी है पर क्या उसी अनुपात में हमारी प्रसन्नता भी बढ़ी है ? पैसों के मामलों में हम कहीं न कहीं गलती कर रहे हैं, जीवन को संतुलित बनाना ज़रूरी है और इसके लिए हमें अपनी आमदनी और उसके इस्तेमाल पर ज़रूर गौर करना चाहिए, नहीं तो भले हम लाखों रूपये कमा लें पर फिर भी प्रसन्न एवं संतुष्ट नहीं रह पाएंगे !

तीन मछलियां

एक सरोवर में तीन दिव्य मछलियां रहती थीं। वहां की तमाम मछलियां उन तीनों के प्रति ही श्रद्धा में बंटी हुई थीं।

एक मछली का नाम व्यावहारिकबुद्धि था, दूसरी का नाम मध्यमबुद्धि और तीसरी का नाम अतिबुद्धि था।

अतिबुद्धि के पास ज्ञान का असीम भंडार था। वह सभी प्रकार के शास्त्रों का ज्ञान रखती थी। मध्यमबुद्धि को उतनी ही दूर तक सोचने की आदत थी, जिससे उसका वास्ता पड़ता था। वह सोचती कम थी, परंपरागत ढंग से अपना काम किया करती थी। व्यवहारिकबुद्धि न परंपरा पर ध्यान देती थी और न ही शास्त्र पर। उसे जब जैसी आवश्यकता होती थी निर्णय लिया करती थी और आवश्यकता न पड़ने पर किसी शास्त्र के पन्ने तक नहीं उलटती थी।

एक दिन कुछ मछुआरे सरोवर के तट पर आये और मछलियों की बहुतायत देखकर बातें करने लगे कि यहां काफी मछलियां हैं, सुबह आकर हम इसमें जाल डालेंगे। उनकी बातें मछलियों नें सुनीं।

व्यवहारिक बुद्धि ने कहा– 'हमें फौरन यह तालाब छोड़ देना चाहिए। पतले सोतों का मार्ग पकड़कर उधर जंगली घास से ढके हुए जंगली सरोवर में चले जाना चाहिये।'

मध्यमबुद्धि ने कहा– 'प्राचीन काल से हमारे पूर्वज ठण्ड के दिनों में ही वहां जाते हैं और अभी तो वो मौसम ही नहीं आया है, हम हमारे वर्षों से चली आ रही इस परंपरा को नहीं तोड़ सकते। मछुआरों का खतरा हो या न हो, हमें इस परंपरा का ध्यान रखना है।'

अतिबुद्धि ने गर्व से हंसते हुए कहा– 'तुम लोग अज्ञानी हो, तुम्हें शास्त्रों का ज्ञान नहीं है। जो बादल गरजते हैं वे बरसते नहीं हैं। फिर हम लोग एक हजार तरीकों से तैरना जानते हैं, पानी के तल में जाकर बैठने की सामर्थ्यता है, हमारी पूंछ में इतनी शक्ति है कि हम जालों को फाड़ सकती हैं। वैसे भी कहा गया है कि संकटों से घिरे हुए हों तो भी अपने घर को छोड़कर परदेश चले जाना अच्छी बात नहीं है। अव्वल तो वे मछुआरे आयेंगे नहीं, आयेंगे तो हम तैरकर नीचे बैठ जायेंगी उनके जाल में आयेंगे ही नहीं, एक दो फंस भी गईं तो पुंछ से जाल फाड़कर निकल जायेंगे। भाई! शास्त्रों और ज्ञानियों के वचनों के विरूद्ध मैं तो नहीं जाऊंगी।

व्यवहारिकबुद्धि ने कहा– 'मैं शास्त्रों के बारे में नहीं जानती, मगर मेरी बुद्धि कहती है कि मनुष्य जैसे ताकतवर और भयानक शत्रु की आशंका सिर पर हो, तो भागकर कहीं छुप जाओ।' ऐसा कहते हुए वह अपने अनुयायिओं को लेकर चल पड़ी।

मध्यमबुद्धि और अतिबुद्धि अपने परंपरा और शास्त्र ज्ञान को लेकर वहीं रूक गयीं अगले दिन मछुआरों ने पूरी तैयारी के साथ आकर वहां जाल डाला और उन दोनों की एक न चली। जब मछुआरे उनके विशाल शरीर को टांग रहे थे तब व्यवहारिकबुद्धि ने गहरी सांस लेकर कहा– 'इनके शास्त्र ज्ञान ने ही धोखा दिया। काश! इनमें थोड़ी व्यवहारिक बुद्धि भी होती।

व्यवहारिक बुद्धि से हमारा आशय है कि किस समय हमें क्या करना चाहिए और जो हम कर रहे हैं उस कार्य का परिणाम निकलने पर क्या समस्यायें आ सकती हैं, यह सोचना ही व्यवहारिक बुद्धि है। बोलचाल की भाषा में हम इसे कॉमन सेंस भी कहते हैं, और भले ही हम बड़े ज्ञानी ना हों मोटी–मोटी किताबें ना पढ़ीं हों लेकिन हम अपनी व्यवहारिक बुद्धि से किसी परिस्थिति का सामना आसानी से कर सकते हैं।

*संकलन– **चन्द्रशेखर जैन,** जयपुर*

स्वाध्याय - कैसे जाने स्वयं को

साधना का एक महत्वपूर्ण व अभिन्न अंग 'स्वाध्याय' है लेकिन स्वाध्याय की प्रक्रिया में जानने योग्य पहली बात यह है कि स्वाध्याय है क्या? स्वाध्याय किसको हैं? सामान्य क्रम में जब हम कोई भी पुस्तक पढें तो उसे स्वाध्याय कहेंगे। परंतु इसके साथ कुछ अैर बातें भी जुड़ी हुई हैं।

'स्वाध्याय' जैसाकि शब्द से प्रतीत होता है कि इसका अर्थ– 'स्व+अध्ययन', हम ऐसा कुछ पढें जो हमें स्वयं के अध्ययन के लिए प्रेरित करे।

स्व–अध्ययन ही सही अर्थों में स्वाध्याय है। यदि हम कुछ भी पढें जैसे– हम भौतिक शास्त्र पढें,रसायन शास्त्र पढें, साहित्य पढें या मनोरंजन के लिए अगर कुछ पढें तो उसे हम स्वाध्याय नहीं कहेंगे। लेकिन जो हमें स्वयं को जानने के लिए, स्वयं से परिचित होने के लिए, स्वयं का ज्ञान प्राप्त करने के लिए, स्वयं का सम्यक रीति से अध्ययन करने के लिए प्रेरित करे – वही स्वाध्याय है।

यदि स्वाध्याय हो तो इष्ट की प्राप्ति होती है। इसलिए स्वाध्याय सामान्य से कुछ अधिक गंभीर व पहन प्रक्रिया है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है कि जिसे करते हुए हम स्वयं को जान पाते हैं। जिसे करने पर हम स्वयं का अनुभव कर पाते हैं। स्वाध्याय हमें अपनी अनुभूतियों की ओर ले जाता है। अपने व्यक्तित्व की परतें खोलता है और धीरे–धीरे हम स्वयं को जानते हुऐ अपनी परतों का, अपने व्यक्तित्व के आयामों का, स्वयं की चेतना का परिचय पाते हैं।

–अनीता जैन
मीराना रोड, बयाना

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा

जयपुर – 302015

आर्थिक चिठ्ठा

31.03.2020 तक

दायित्व	राशि (रु)	संपत्ति	राशि (रु)
समग्र निधि		**निवेश**	
प्रारंभिक शेष	26,27,265.90	बैंक सावधि जमा	38,30,765.04
जोड़ें : आजीवन सदस्यता शुल्क	49,750.00		
		अग्रिम और जमा	
रिजर्व और अधिशेष		टीडीएस	92,119.16
प्रारंभिक शेष	17,92,713.19		
जोड़ें : चालू वर्ष के अधिशेष /(घाटा)	3,61,169.77	**नकदी और बैंक बैलेंस**	
		इलाहाबाद बैंक आगरा	89,253.06
चिकित्सा कोष		कॉर्पोरेशन बैंक आगरा	91,110.65
प्रारंभिक शेष	1,34,205.00	पंजाब नेशनल बैंक	10,017.00
जोड़ें : चिकित्सा कोष प्राप्त राशि	-	एस बी आई महेश नगर	1,45,692.30
		एस बी आई सी स्कीम	3,81,044.72
वर्तमान देयताएं		सिंडीकेट बैंक, आगरा	5,30,575.38
स्वरोजगार कोष	1,00,000.00	रोकड़ शेष	39,191.55
पत्रिका महासभा	35,124.00		
छात्रवृत्ति	65,501.00		
मूकबधिर पशु –पक्षी बचाओं	6,000.00		
केन्द्रांश	5,040.00		
संरक्षक सदस्यता	33,000.00		
कुल	**52,09,768.86**	**कुल**	**52,09,768.86**

हमारी ऑडिट रिर्पोट के अनुसार उसी तिथि तक संलग्न

वास्ते अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा

कृते श्री अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा

अध्यक्ष महामन्त्री कोषाध्यक्ष

[महासचिव] [अध्यक्ष]

UDIN: 20076903AAAADP8951

स्थान : जयपुर

तिथि : 15.12.2020

वास्ते गुप्ता गजानन्द एण्ड ऐसोसिएट्स

चार्टर्ड अकाउंटेंट्स

फर्म पंजीकरण कमांक – 07999C

(गजानन्द गुप्ता)

पार्टनर

सदस्यता संख्या 076903

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा

जयपुर – 302015

आय और व्यय खाता

31 मार्च, 2020 को समाप्त वर्ष के लिए

व्यय	राशि (रु)	आय	राशि (रु)
मुद्रण और स्टेशनरी	4,256.00	महासभा के विशेष सहायता	45,467.00
विधवा अनुदान	11,71,000.00	विधवा अनुदान	10,46,902.95
डाक व्यय	41.00	एफडीआर पर ब्याज	3,98,432.01
बैंक कमीशन	951.00	बचत बैंक खाता पर ब्याज	31,515.81
समूहिक शादी	51,000.00	समूहिक शादी	84,300.00
विविध खर्च खाता	-		
ऑडिट एवं सी ए फीस	18,200.00		
अधिशेष	3,61,169.77		
कुल	16,06,617.77	कुल	16,06,617.77

हमारी ऑडिट रिपोर्ट के अनुसार उसी तिथि तक संलग्न

वास्ते अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा

[महासचिव] [अध्यक्ष]

वास्ते गुप्ता गजानन्द एण्ड ऐसोसिएट्स
चार्टर्ड अकाउंटेट्स
फर्म पंजीकरण कमांक – 07999C

(गजानन्द गुप्ता)
पार्टनर
सदस्यता संख्या 076903

UDIN : 20076903AAAADP8951
स्थान : जयपुर
तिथि : 15.12.2020

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा

जयपुर – 302015

प्राप्ति और भुगतान खाता

31 मार्च, 2020 को समाप्त वर्ष के लिए

प्राप्तियां	राशि (रु)	भुगतान	राशि (रु)
प्रांरभिक शेष		**राजस्व भुगतान वर्ष के दौरान**	
कॉर्पोरेशन बैंक आगरा	67,893.65	मुद्रण और स्टेशनरी	4,256.00
सिंडीकेट बैंक आगरा	4,18,577.68	विधवा अनुदान	11,71,000.00
इलाहाबाद बैंक आगरा	67,460.06	डाक व्यय	41.00
एस बी आई महेश नगर	25,991.30	बैंक कमीशन	951.00
एस बी आई सी स्कीम	4,28,313.77	समूहिक शादी	51,000.00
रोकड़	39,394.55	विविध खर्च खाता	-
		ऑडिट एवं सी ए फीस	18,200.00
राजस्व प्राप्तियां वर्ष के दौरान			
महासभा के विशेष सहायता	45,467.00		
विधवा अनुदान	10,46,902.95	**पुंजीगत भुगतान वर्ष के दौरान**	
एफडीआर पर ब्याज	3,98,432.01	टीडीएस	-
बचत बैंक खाता पर ब्याज	31,515.81	छात्रवृत्ति	-
समूहिक शादी	84,300.00	बैंक सावधि जमा	2,11,243.12
पूंजीगत प्राप्तियां वर्ष के दौरान		**समापन शेष**	
महासभा आजीवन सदस्यता	49,750.00	इलाहाबाद बैंक आगरा	89,253.06
संरक्षक सदस्यता	-	कॉर्पोरेशन बैंक आगरा	91,110.65
पत्रिका महासभा	9,394.00	पंजाब नेशनल बैंक	10,017.00
केंद्रान्श	1,740.00	एस बी आई महेश नगर	1,45,692.30
टीडीएस	28,443.00	एस बी आई सी स्कीम	3,81,044.72
		सिंडीकेट बैंक, आगरा	5,30,575.38
		रोकड़ शेष	39,191.55
कुल	27,43,575.78	कुल	27,43,575.78

हमारी ऑडिट रिर्पोट के अनुसार उसी तिथि तक संलग्न

वास्ते अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा

[महासचिव] [अध्यक्ष]

वास्ते गुप्ता गजानन्द एण्ड ऐसोसिएट्स
चार्टर्ड अकाउंटेंट्स
फर्म पंजीकरण कमांक – 07999C

(गजानन्द गुप्ता)
पार्टनर
सदस्यता संख्या 076903

UDIN: 20076903AAAADP8951
स्थान : जयपुर
तिथि : 15.12.2020

भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. केदार नाथ जी जैन

(स्वर्गवास-15.03.2009)

स्व. कमला देवी जी जैन

(स्वर्गवास-25.03.2020)

आपका स्नेह, सद्व्यवहार, सेवा भावना एवं
प्रेरणादायक चरित्र हमारा सदैव मार्गदर्शन करता रहेगा।
हम सभी आपको शत्-शत् नमन करते हुए अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधू :
प्रकाश चन्द जैन-किरन जैन
सुरेन्द्र कुमार जैन-विमलेश जैन
शीतल प्रसाद जैन-अंशु जैन
सुमित चन्द जैन-साधना जैन

पौत्र, पौत्री :
प्रखर, हर्षित, रोशनी,
साक्षी, आस्था

पौत्र-पौत्रवधु :
सूरज जैन-दीपिका जैन

नवासा-नवासा वधु :
संदेश जैन-अंशु जैन, प्रियल, दिविज
रोहित जैन-पारुल जैन, कृति, निवांश
आदित्य, विवेक

पुत्री-दामाद :
पूनम जैन-जिनेन्द्र जैन
चन्दा जैन-राजकुमार जैन
आशा जैन-राजकुमार जैन

नवासी-नवासी दामाद :
रितु जैन-संदीप जैन, पूर्वांशी
अक्षिता, भावना, सुरभि

प्रतिष्ठान :

जैन प्रोविजन स्टोर - *(मो. 9826983099)*
हर्षित प्रोविजन्स - *(मो. 7898344526)*
सूरज सेल्स एजेन्सी - *(मो. 9770311115)*
प्रखर सेल्स एजेन्सी - *(मो. 9340626518)*

समस्त वंजारे परिवार, ए.बी. रोड, बानमोर, जिला मुरैना (म.प्र.)

भावभीनी श्रद्धांजलि

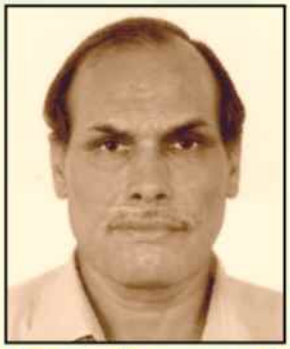

स्व. श्री महावीर प्रसाद जी जैन

(सुपुत्र स्व. श्री हरीशचन्द्र जी जैन)

(पुण्यतिथि : 21.5.2017)

स्व. ई. श्री मोहित कुमार जी जैन

(सुपुत्र स्व. श्री महावीर प्रसाद जी जैन)

(पुण्यतिथि : 9.8.2018)

हम आपको सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए
भगवान वीर से आपकी चिर आत्मीय शांति की प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धावनत

श्रीमती मिथलेश जैन
(धर्मपत्नी)
डॉ. मेघा जैन-डॉ. पीयूष जैन
(पुत्री-दामाद)

श्रीमती मिथलेश जैन
(माँ)
डॉ. मेघा जैन-डॉ. पीयूष जैन
(बहन-बहनोई)

मोहित कुमार जैन ट्रस्ट (पंजि.)

ए/165, पालम एक्सटेंशन, सेक्टर 7, द्वारका, नई दिल्ली-110077
दूरभाष : 9599660709, 9599230509

सूचना

1. पत्रिका में प्रकाशित वर/वधू की तलाश के अंतर्गत विवरण की सत्यता से सम्पादक अथवा पत्रिका का किसी भी प्रकार का दायित्व नहीं हैं। वर/वधू दोनों पक्ष पूर्ण जानकारी अपने स्तर से करने के बाद ही संबंध स्थापित करें।
2. पात्रों के विवरण में आयु के स्थान पर जन्मतिथि तथा आय चार/पांच अंको में, के स्थान पर वास्तविक आय लिखें।

नोट : प्रकाशन योग्य सामग्री एवं संबंध होने की सूचना पत्रिका संयोजक को प्रषित करें जिससे आगामी अंक में विज्ञापन का प्रकाशन किया जाये या न किया जाये।

वर की तलाश

★ **Arpita Jain** D/o Sh. Gopal Jain, DoB 25.06.1991 (at 10:35 am, Jaipur), Fair Complexion, Height 5'-2", Gotra : Self- Bhamariya, Mama- Bharkolia, Education- M.Sc. Chemistry MNIT College, Jaipur & B.Ed., Working as Self Employed Teaching Running Coaching Classes, Contact : 432, Rajni Vihar, Aimer Road, Jaipur-302024, Ph.: 0141-2354378, Mob.: 9413042927, 9460474389 *(Jan.)*

★ **Pinky Jain** D/o Sh. Anil Kumar Jain, DoB 26.10.1995 (at 5:30 PM), Height 5'-2", Education- B.Com., Gotra : Self- Banjare, Mama- Jantiera, Contact : Station Road, Banmore, Morena, Mob.: 9977196503, 8839359923 *(Jan.)*

★ **Priyanshi Jain** (Manglik) D/o Sh. Satish Chand Jain, DoB 01.11.1994 (at 12:20 pm, Gwalior), Height 5'-3", Education- MBA (Business Anatytics & Operations) from IIIT Gwalior, BE (CS) from ITM Gwalior, Working at Axtria India Pvt. Ltd. Gurgaon (12 LPA), Gotra : Self- Bariwar, Mama- Sangarwasiya, Contact : Sursh Chand Satish Chand Jain, C/o Banshidhar Suresh Chand Jain, Lohiya Bazar, Lashkar, Gwalior, Mob.: 9425753451, 9425109863, 8989474692, Email : jain.palash1992@gmail.com *(Jan.)*

★ **Priya Jain** D/o Sh. Anil Jain, DoB 26.02.1996, Height 5'-2", Fair Color, Education- B.Sc., Diploma in Accounting, Gotra : Self- Chandpuria, Mama- Lohkarodiya, Contact : B-33, Janakpuri, New Sahaganj, Agra, Mob.: 9897012342 *(Jan.)*

★ **Deepali Jain** (Manglik) D/o Sh. Ajeet Kumar Jain, DoB 31.10.1992 (at 11:48 pm, Hindaun City), Height 5'-1", Education- M.Tech (EC), Job- A.M. (ICICI Bank, Hindaun City), Gotra : Self- Badvasia, Mama- Nangesuriya, Contact : Opp. Chandra Sr. Sec. School, Mohan Nagar, Hindaun City, Dist. Karauli, Mob.: 9414400922, 9079205098 *(Jan.)*

★ **Shailly Jain** D/o Late Sh. A.K. Jain, DoB 25.08.1993 (at 12:22 pm, Varodara, Gujarat), Height 4'-9", Education- PGDBA in Finance, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Banjara, Contact : Sh. R.K. Jain, C-13, Pratik Enclave, Kamla Nagar, Agra, Mob.: 9917474357, Email : rajendr1959@gmail.com *(Jan.)*

★ **Preetil Jain** D/o Sh. Sunit Jain, DoB 10.08.1989 (at 11:45 pm, Karauli), Height 5'-6", Education- M.A., M.Ed., Occupation- Central Government Teacher at Navodaya Vidyalaya, Gotra : Self- Chaurbamar, Mama- Rajoriya, Contact : 101B/106, Patel Marg, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9413182141, 8005568168 *(Feb.)*

★ **Surbhi Jain** D/o Sh. J.K. Jain, DoB 23.9.1993 (at 7:55 am, Gangapur City), Height 5Ft., Education- MBA (XIME Bangalore), B.Tech (RCEW Jaipur), Occupation- Senior Associate, HR Mindtree Limited, Bangalore, Gotra : Self- Rajoriya, Mama- Choudhary, Contact : E1/325 Chitrakoot, Gandhi Path, Jaipur-302021, Mob.: 9887734133, 8769421338 *(Feb.)*

★ **Megha Jain** D/o Sh. Sunil Kumar Jain, DoB 02.04.1996 (at 2:20 pm, Beawar), Height 5'-3", Education- B.Tech (CS), Contact : Sunil Kumar Jain, Saras Dugdh Dairy, Raniwara, Dist. Jalore, Mob.: 9460960622, 9001831835 *(Feb.)*

★ **Amisha Jain** (Manglik) D/o Sh. Kamal Kumar Jain, DoB 10.07.1997 (at 1:56 pm), Height 5.3 feet, Education- B.Com, MBA, Job- HDFC Mutual Fund, Gotra : Self- Thakuriya, Mama- Chodha parivaar, Contact : 103, Chhotti Chhapeti, Firozabad-283203, Mob.: 7351568144, 7830641569 *(Feb.)*

★ **Arpita Jain** D/o Sh. Gopal Jain, DoB 25.06.1991 (at 10:35 am Jaipur), Fair Complexion, Height 5'-2", Education- M.Sc. Chemistry MNIT College Jaipur & B.Ed, Working as Self Employed Teaching Running Coaching Classes, Gotra : Self- Bhamariya, Mama- Bharkolia, Contact : 432, Rajni Vihar, Ajmer Road, Jaipur-302024, Ph.: 0141-2354378, Mob.: 9413042927, 9460474389 *(Feb.)*

★ **Yukta Jain** (Manglik) D/o Sh. Satyendra Kumar Jain, DoB 16.11.1993 (at 9:35 AM, Agra), Height-5Ft., Education- M.Com., B.Ed., Profession- Teacher, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Kotiya, Contact : 9, Vishv Karma Vatika, Shahganj Road, Bodla, Agra-282007, Mob.: 7520615933, 9410857876 *(Feb.)*

★ **Shivangi Jain** D/o Late Sh. Pawan Kumar Jain (Harsana Wale), DoB 26.10.1992, Height- 5'-1", Education- M.Com., Working as LDC in Collectorate, Alwar, Gotra : Self- Choudhary, Mama- Januthariya, Contact : 7976528154, 9468927774 *(Feb.)*

★ **Rashi Jain** D/o Sh. Anil Kumar Jain Baroliya, DoB 14.1.1996 (at 7:38 pm, Agra), Height- 5'-3", Education- B.Arch, Gotra : Self- Baroliya, Mama- Chaurbambar, Contact : B-677, Kamla Nagar, Agra, Mob.: 7060066267, 9627136267 *(Feb.)*

★ **Vidushi Jain** D/o Sh. Omkar Prasad Jain, DoB 16.11.1991, Height- 5'-2", Education- MA, M.Phill, NET-JRF, Pursuing PhD (in History of Jainism from Delhi University), Gotra : Self- Ghati, Mama- Sangesuriya, Contact : RZG-591, Raj Nagar Part 2, Palam Colony, New Delhi-110077, Mob.: 9911219772, 9871367663, Email : omkarjain137@yahoo.in *(Feb.)*

★ **Karishma Jain** D/o Sh. Hemraj Jain, DoB 09.07.1994 (at Kherli), Height- 5'-2", Education- B.A. (D.U.), M.A ., Gotra : Self- Choudhary, Mama- Nangaswariya, Contact : K-19/231, Ratiya Marg, Sangam vihar, New Delhi, Delhi-110062, Mob.: 9873197440 *(Feb.)*

★ **Alka Jain** D/o Sh. Ravi Prakash Jain, DoB 02.12.1989 (at 12:35pm, Ajmer), Education- M.Com, Gotra : Agariya, Contact : 4, Danmal Mathur Colony, Gulabbadi, Ajmer, Mob.: 9269289003, 7568688111 *(Feb.)*

★ **Deeksha Jain** (Anshik Manglik) D/o Sh. Rakesh Kumar Jain, DoB 07.08.1993 (at 10:15 am, Agra), Height- 5'-4", Education- B.Com., M.B.A., Job- Analyst in E.Y. Noida, Income- 5 LPa, Gotra : Self- Badaria, Mama- Chorbambar, Contact : 325, Jaipur House, Agra-02, Mob.: 9997039641, Ph.: 0562-4031148 *(March)*

★ **Dr. Aditi Jain** D/o Sh. Ashok Kumar Jain, DoB 25.04.1993 (at 7:40 PM, Alwar), Fair Complexion, Education- Bachelor of Dentistry (BDS), ESIC, Job- HOD Biology (NEET) at Progessive Minds, Delhi, Gotra : Self- Rajeshwari, Mama- Badwasia, Contact : B-437, Sainik Colony, Sector 49, Faridabad, Mob.: 9811031037, 9310031037 *(March)*

★ **Priyanka Jain** D/o Sh. Jagdish Prasad Jain, DoB 29.05.1991 (at 4:35 pm), Height 5'-5", Education- B.Tech (C.S), Occupation- Software Developer in Fiserv Noida, Income- 20.3 LPA, Gotra : Self- Chourbambar, Mama-Salavadiya, Contact : 403, Patrkar Colony, Near Manasarover, Jaipur, Mob.: 8302518811, 7976466712 *(March)*

★ **Nikita Jain** D/o Sh. Vijay Kumar Jain, DoB 13.11.1995 (at 03:23 pm, Faridabad), Height- 5'-5", Education- B.Com (Honors) From University of Delhi, Occupation- Working as Sales Officer With Apply Board India Pvt. Ltd. (Gurgaon), Salary 5 LPA, Contact : Faridabad, Gotra : Self- Barolia, Mama- Thakur, Mob.: 9818458389, 9873171878 *(March)*

★ **Priyanka Vora** D/o Sh. Rajinder Kumar Vora, DoB 04.12.1991, Height- 4'-9", Fair Complexion, Educational- Graduated in Bachelors in Computer Applications, Occupation- Works for the Government of India, Ministry of Communications, Gotra : Self- Vora, Mama- Chaur-bambaar, Contact : Block-H, Pocket-3, House No. 79, Sector-16, Rohini New Delhi, Mob.: 9654718697, 9268044107 *(March)*

★ **Soumya Jain** D/o Sh. Sunil Kumar Jain, DoB 01.09.1993 (at 5:27 am, Alwar), Height- 5'-3", Fair Color, Education- M.Com (A.B.S.T.), B. Ed., Gotra : Self- Chorbambar, Mama- Maimuda, Contact : 526, Lajpat Nagar, Scheme No.2, Alwar-301001, Mob.: 8005710768, 9461192798 *(March)*

★ **Neha Jain** D/o Sh. Mohitash Jain, DoB 03.01.2000 (at 12:25 pm, Agra), Height- 5'-3", Fair Complexion, Education M.Sc. (Previous), CCC (Computer Course), Gotra : Self- Kher, Mama- Janutharia, Contact : Sector 7, 537, Avas Vikas Colony, Bodla, Agra, Mob.: 9837314626, 9358980224, 9368728827 *(March)*

★ **Ruchi Jain** D/o Sh. Surendra Kumar Jain, DoB 01.12.1994 (at 04:13 am, Ahmedabad), Height- 165cm, Education B.E. in Power Electronics, Working as a Probationary Officer at Union Bank of India (PSB), Gotra : Self- Kherastiya, Mama- Athvarsiya, Contact : 7359281129, 9574308828, Email : surendrajain6064@gmail.com *(March)*

★ **Ena Jain** D/o Late Sh. Umesh Chand Jain, G.D./o Sh. Kastoor Chand Jain (Nangal Sahadi wale, Alwar), DoB 15.04.1995 (at 12:10 am, Abu Road), Height- 5'-6", Education B.Tech Jaipur, Job- Software Engineer Eurofins IT Solutions, Banglore, Gotra : Self- Lohkarodiya, Mama- Kotia, Contact : P.C. Jain, Opp. Mahavir Talkeej, 15, Mahavir Colony, Abu Road, Sirohi, Mob.: 7014562276, 8003893899, 9461633255, Email : prakash.chand.jain2@ sbi.co.in *(March)*

वधू की तलाश

कृपया दहेज लोभी पत्रिका में प्रकाशनार्थ विज्ञापन न भेजें

★ **दीपक जैन** पुत्र श्री सुनील कुमार जैन जन्मतिथि 20.04.1993 (प्रातः 9:20), कद 5'–7'', शिक्षा

बी.ई. (आई.टी), जॉब– हॉटस्टार, बैंगलोर, गोत्र : स्वयं– बोहरंगडंगिया (पल्लीवाल), मामा– चांदपुरिया, संपर्क : फ्लैट नंबर 302, श्री हाइट्स अपार्टमेंट, बिहाइंड काशीनाथ लॉज, जलगांव, महाराष्ट्र, मोबाईल : 9423490351, 8421425100 *(जनवरी)*

★ **शुभम जैन** पुत्र स्व. श्री राजेश कुमार जैन, जन्मतिथि 13.07.1994, कद– 5'–11'', शिक्षा– बी.कॉम, एमबीए, अम्बुजा सीमेन्ट में क्षेत्रीय विक्रय अधिकारी के पद पर कार्यरत, गोत्र : स्वयं– जनुथरिया, मामा– बडवासिया, सम्पर्क: 9529397529 *(जनवरी)*

★ **अंकित जैन** पुत्र श्री जवाहर लाल जैन, जन्मतिथि 22.11.1989 (प्रातः 8:32), कद– 5'–1'', शिक्षा– एमबीए, जॉब– एमिटी यूनिवर्सिटी मानेसर गुड़गांव, गोत्र : स्वयं– चांदपुरिया (पल्लीवाल), मामा– खाली ढगिया, संपर्क : जगन विहार कॉलोनी, अछनेरा, आगरा, मो.: 9837316219, 7042064199 *(फरवरी)*

★ **सत्यम जैन** पुत्र श्री भोलाराम जैन पंसारी, जन्मतिथि 8.7.1993 (प्रातः 1:42), कद– 5'–5'', शिक्षा– एमबीए, मार्केटिंग, व्यवसाय– अरिहंत फार्मा, होलसेल एवं रिटेल मेडिकल स्टोर, भोपाल, आय– 15 लाख वार्षिक, गोत्र : स्वयं– नगेसुरिया, मामा– डंगया, संपर्क : भोला पंसारी, जौरा, जिला मुरैना, मो.: 9425757414, 9893359596 *(फरवरी)*

★ **गौरव जैन** पुत्र स्व. श्री सुरेश चन्द जैन, उम्र 27 वर्ष, कद– 5'–7'', शिक्षा– बी.ए., व्यवसाय– स्वयं का जनरल स्टोर, आटा चक्की, खेती, आय– लगभग 4 लाख वार्षिक, गोत्र : स्वयं– चोरबम्बार, संपर्क : 7697239254 *(मार्च)*

★ **रिषभ जैन** पुत्र श्री प्रदीप कुमार जैन, जन्मतिथि 13.5.1995 (प्रातः 6 बजे), कद– 5'–6'', शिक्षा– पी.जी.डी.एम.बी.ए. फाइनेन्स, कार्यरत– रिजनल क्रेडिट हेड– आई.डी.एफ.सी. बैंक, जयपुर, गोत्र : स्वयं– जनुथरिया, मामा– चौरबम्बार, संपर्क : 9, भजन नगर, अजमेर रोड, ब्यावर, अजमेर, मो.: 9460312001, 9414866607, ईमेल : pinki586@gmail.com *(मार्च)*

★ **Ajeet Kumar Jain** S/o Late Sh. Ramesh Chand Jain, DoB 03.11.1990, Height 5'-8", Education- M.Sc., B.Ed., Working as 2nd Grade Science Teacher at Govt. Senior Secondary School at Mahwa Block, District Dausa, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Bhadkolia, Preferably Govt. Employee, Contact : Dr. Ashok Jain, Jain Hospital Mahwa, 9414079829 *(Jan.)*

★ **Anurag Jain** S/o Sh. M.K. Jain, DoB 4.5.1992 (at 1:25 night, Gwalioar), Height 5'-6", Education B.Com, M.A. (Economics), C.A. final (2nd group) pursuing, Occupation- Chartet Firm, Gotra : Self-Nihoniya, Mama- Chauebambar, Contact : Sh. M.K. Jain, Gwalior, Mob.: 9425336641, 9425726333 *(Jan.)*

★ **Sajal Jain** S/o Sh. Adiraj Jain, DoB 03.02.1990 (at 4:15 AM, Aligarh), Height- 5'-7", Education- C.S. (Company Secretary), L.L.B, B.Com (Hons.), Occupation- Professional, Practicing Company Secretary at Rajouri Garden, New Delhi-110027, Income- 8.5 LPA, Gotra : Self- Kalonia (Palliwal Jain), Mama- Garg, Contact : 9/6A, Jain Street, Modi Khana, Aligarh, Uttar Pardesh-202001, Mob.: 91-9873297097, Email : jain.adiraj@gmail.com *(Jan.)*

★ **Gaurav Jain** S/o Sh. Dinesh Kumar Jain, DoB 03.09.1986 (at 2:30 am, Kapren Distt. Bundi), Height 5'-7", Education- MA, Occupation- Stock Market Jaipur, Income- 6 lakh+, Gotra : Self-Bhattarai, Mama- Barolia, Contact : P.No. 34, Silver Moon Residency, Krishna Sagar Dholai, Near Jain Mandir, Muhana Road, Mansarovar, Jaipur-302020, Mob.: 6375025680 *(Jan.)*

★ **Jitendra Jain S/o Sh. Dinesh Kumar Jain,** DoB 17.01.1992 (at 1:30 PM, Kapren Distt. Bundi), Height 5'-6", Education- M.Com, Occupation- Accountant, Income- 5 Lakh+, Gotra : Self-Bhattarai, Mama- Barolia, Contact : P.No. 34, Silver Moon Residency, Krishna Sagar Dholai, Near Jain Mandir, Muhana Road, Mansarovar, Jaipur-302020, Mob.: 6375025680 *(Jan.)*

★ **Lucky Jain** S/o Sh. Dinesh Kumar Jain, DoB 08.07.1989 (at 5:20 am, Sawai Madhopur), Height 5'-4", Education- M.A., Occupation- LIC Adviser & Accountant, Jaipur. Income- 6 lakh+, Gotra : Self-Bhattarai, Mama- Barolia, Contact : P.No. 34, Silver Moon Residency, Krishna Sagar Dholai, Near Jain Mandir, Muhana Road, Mansarovar, Jaipur-302020, Mob.: 6375025680 *(Jan.)*

★ **Vinit Kumar Jain** S/o Sh. Rajendra Prasad Jain, DoB 17.07.1989 (at 8:25 PM, Bharatpur), Height-5'-9", Education- B.Tech in Mechanical Engineering, Occupation- Assistant Manager (Engg.) in Rajasthan Cooperative Dairy Federation (Cattle feed Plant) Nadbai, Bharatpur, Gotra : Self-Ladodia, Mama- Athvarsia, Contact : Plot No. B-14, Ranjeet Nagar, Near Jain Temple, Bharatpur, Mob.: 9413444164, 9414348915 *(Jan.)*

★ **Ankur Jain** (Manglik) S/o Sh. Ramesh Chand Jain, DoB 31.07.1989 (6:50 pm, Agra), Height 5'-9", Education Diploma in Auto Eng., M.Sc. (Phy. 1st Div.), B.Ed., Occupation- Sr. Executive Technical Surveyor, General Insurance, Income- 4 LPA,

Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Sengarwasia, Mob.: 9045216301, 9258065928 *(Jan.)*

★ **Abhishek Jain** S/o Sh. Ramesh Chand Jain, DoB 18.08.1990, Height 5'-10", Education- MBA Marketing & HR, Occupation- Canara Bank Housing Finance Agra, Income- 30,000/- Per Month, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Sengarwasia, Mob.: 9045216301 9258065928 *(Jan.)*

★ **Nilesh Jain** S/o Sh. Rajendra Kumar Jain, DoB 30.06.1985 (at.1:22 pm, Ajmer), Height- 5'-8", Education- M.Com, MBA, Occupation- Working as a State Head at Manba Finance Ltd. Co. Jaipur Income- 10.50 LPA, Gotra : Self- Maimunda, Mama- Chorbambar, Contact : 11/40, Kaveri Path, Mansarover, Jaipur, Mob.: 9983444198 (W), 9829818894 *(Jan.)*

★ **Vivek Jain** S/o Late Sh. Vinod Kumar Jain, DoB 27.08.1993 (at 05:55pm, Mandawar), Height- 5'-5", Education- B.Com., Owner of Wholesale Business at Jaipur, Earning more than 6 digits p.m., Gotra : Self- Kotiya, Mama- Sangarvasiya, Contact : 78/71, Arawali Marg, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9414067972, 7425867972 *(Jan.)*

★ **Ravi Jain** S/o Anil Kumar Jain, DoB 20.09.1993 (at 9:20 am), Height 5'-7", Education- B.Com., Business- Ravi Electronic Station Road, Banmor, Neeraj Electronics Finting Material, Gotra : Self- Banjare, Mama- Jantria, Mob.: 9977196503, 8839359923 *(Jan.)*

★ **Akant Jain** S/o Sh. Suresh Chand Jain, DoB 13.11.1989 (at 8:02 PM, Alwar), Height- 5'-7", Education- B.Tech in Electronics and Communication Engineering and MBA in Marketing and Finance, Working with Stonify Surfaces Pvt. Ltd., Jaipur as Business Development Manager, Package- 7 LPA, Gotras : Self- Rajeshwari, Mama- Maleshwari, Contact : Sh. Suresh Chand Jain, Jain Bhawan, Gali No. 11, Mohalla Darukutta, Road No. 2, Near Kashi Ram Circle, Alwar-301001, Mob.: 9414641566, Ph.: 0144-2345479, Email- prateek_liet1@yahoo.com *(Jan.)*

★ **Deepesh Jain** S/o Sh. Kailash Chand Jain (SBI), DoB 02.06.1994 (at 11:40 PM, Kherli Alwar) Height 5'-9", Education- B.Tech., CSE, Job- Software Development Engineer-2 at Amazon, Bangalore, Gotra : Self- Baderia, Mama- Chaudbambar, Contact : 262/196, Pratap Nagar, Sanaganer, Jaipur, Mob.: 9001896028, 7665841000 *(Jan.)*

★ **Divyanshu Jain** S/o Sh. Prabhash Chand Jain, DoB 03.07.1992 (at 12:12 PM, Jaipur), Height 5'-6", Education- B.Tech (Mechanical) from MNIT, Jaipur, Occupation- Consultant, in ZS at Gurgaon, Package- 22 LPA, Gotra : Self- Pavatiya, Mama- Vairashtak, Contact : 691, 2nd Floor, Rani Sati Nagar, Janpath, Gate No. 09, Jaipur, Mob.: 9828274035, Email : prabhashjain5@gmail.com *(Jan.)*

★ **Bhupesh Kumar Jain** S/o Sh. Vimal Chand Jain, DoB 17.09.1991 (at 4:55 am, Alwar), Height 178 cm., Education- B.Tech (ECE), RS-CIT, Job- Junior Associate SBI Bank Bhavnagar Gujarat, Gotra : Self- Mastang Dangiya Chaudhary, Mama- Baroliya, Contact : VPO Barodakan (Laxmangarh), Distt. Alwar-321607, Mob.: 9413585389, 9079754722 *(Jan.)*

★ **Shashank Jain** S/o Sh. Vimal Chand Jain, DoB 11.04.1993 (at 9:00 am, Joura), Height 5'-9", Education- B.Sc. Mathematics, PG Diploma in Tourism & Marketing (MBA), Occupation- Co-founder & Director at Courage Hospitality Pvt. Ltd., Partner at Travel Googly.com, Gotra : Self- Lokarere, Mama- Kher, Contact : 343/129, Shitla Gali, Abroad, Mob.: 8602504552, Email : sjain0764@gmail.com *(Jan.)*

★ **Ronak Suresh Jain** S/o Sh. Suresh Chand Dhannalal Jain, DoB 25.01.1994, Height 5'-8", Fair Complexion, Education- MBA in Finance, B.Com, M.Com, Occupation- Service in Edelweiss Ltd., Gotra : Self- Rajoriya, Mama- Badariya, Contact : 305-A, Wing Samriddhi Tower Indralok, Phase 8, Bhayandar East, Mumbai-401105, Mob.: 9819391454, 9819327962, Email : rahul.jain902@gmail.com *(Jan.)*

★ **Arpit Jain** S/o Sh. Narendra Kumar Jain, DoB 12.09.1992 (at 8:31 am, Jaipur), Height 5'-7", Education- M.Tech, pursiuing Ph.D. IIT Hyderabad, Occupation- IC Layout Designor in Synopsys Hyderabad, Package 20 LPA, Gotra : Self- Ladoriya, Mama- Bayaniya, Contact : Ward No. 7, Jain Colony, Kajodi Ka Mohalla, Kherli, Alwar, Mob.: 9413907815, Email : arpitkherli@gmail.com *(Jan.)*

★ **Karan Jain** S/o Sh. Tikam Jain, DoB 24.01.1994 (at 7:58 pm, Alwar), Education- B.Com, PG Diploma in Banking & Finance, Job- Relationship Manager in ICICI Bank, Alwar, Income 5.6 LPA, Gotra : Self- Maimuda, Mama- Kaloniya, Contact : 316, Arya Nagar, Alwar, Mob.: 9414367669, 7726884348 *(Jan.)*

★ **Aayush Jain** S/o Sh. Ajeet Kumar Jain, DoB 25.04.1993, Height 5'-4.5", Education- B.Tech (Electrical), Working as System Anatyst in Crisil Pvt. Ltd. Mumbai, Package 6.10 LPA, Gotra : Self- Janutharia, Mama- Barbasia, Contact : 21/1048, Indira Nagar, Lucknow, Mob.: 9412850182, 9457465002 *(Jan.)*

★ **Abhishek Jain** S/o Sh. Rajendra Kumar Jain, DoB 06.11.1991, Height 5'-10", Education- B.Com, C.A.,

CS (pursuing), Working as Credit Manager in ICICI Bank at Jaipur, Income 7.5 LPA, Gotra : Self- Badvasia, Mama- Baderia, Contact : A-28, Dadudayal Nagar, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9413630825, 6375090668 *(Jan.)*

★ **Nitin Jain** (Divorced) S/o Late Sh. Munna Lal Jain, DoB 12.12.1986 (at 4:05 am, Agra), Height 5'-11", Education- MBA (UPTU), M.Com., LLB, Working in University Study Center, Khandari Agra, Gotra : Self- Chandpuriya, Mama- Maimura, Contact : Smt. Laxmi Jain, Sector 5, Bodla, Agra, Mob.: 808182831, 9634530430 *(Jan.)*

★ **Himanchal Jain** S/o Sh. M.L. Jain, DoB- 14.06.1994, Height 5'-7", Education- B.Tech. The LNMIIT Jaipur, Occupation- Data Engineer at Amazon, Gurgaon, Contact : 22, Olive Homes, Mansarovar Extension, Jaipur, Mob.: 9340940882, 9694943663 *(Feb.)*

★ **Ajit Jain**, S/o Late Sh. Vinod Kumar Jain, DoB 27.06.1990 (at 3:55 PM, Bharatpur), Height- 5'-10", Education- B.Tech (VIT Vellore), Presently Working as Assistant Manager in Canara Bank, Bayana, Gotra : Self- Chourbambar, Mama- Borandangya, Contact : • Smt. Pushpa Jain, Bharatpur (M) 9785122157, • Ashwani Jain, Bharatpur (M) 6350427579 *(Feb.)*

★ **Nivesh Jain** S/o Sh. Ashok Jain, DoB 07.08.1995, Height 5'-6", Working in Punjab National Bank at Tizara, Gotra : Self- Ambia, Mama- Mittal, Contact : 1/225, Kala Kua Housing Board, Alwar, Mob.: 9413739054, 9950087666, 9413455347 *(Feb.)*

★ **CA Akhlesh Jain**, DoB 26.09.1989, Chartered Accountant, Gotra : Self- Aameshwariya, Mama- Chorbhamar, Working in Airports Authority of India (PSU under Central Govt.) present posting at Surat Airport (Gujarat), CTC <14 Lakhs, Contact : 1-D, Ram Vihar, Near Subodh Public School, Sanganer, Jaipur, Mob.: 8619357171, 9461210084 *(Feb.)*

★ **Abhay Jain** (Manglik) S/o Sh. Prakash Chandra Jain, DoB 20.11.1993 (at 7:25 am), Height 5'-11", Education- B.Tech (Electronics & Communication) (Hons), Gotra : Self- Chorbhamar, Mama- Behtariya, Working in KPMG, Bangalore as Data Scientist, CTC 9 Lakhs, Contact : Address : Meera Kunj, Mandawara Road, Jain Colony, Hindaun City, Mob.: 9024320476, 9667810819 *(Feb.)*

★ **Neeraj Jain** S/o Sh. Ashok Kumar Jain, DoB 04.04.1992 (at 7 am, Agra), Height- 5'-5", Education- MBA, Job- HDFC Bank (Cashier) Mayur Vihar, Delhi, Packege 6 LPA, Gotra : Self- Corambar, Mama- Kasmiriya, Contact : 13/252, Nunhai, Near Jain Temple, Rambagh, Agra, Mob.: 844592249, 8273200865 *(Feb.)*

★ **Anubhav Jain** S/o Arvind Kumar Jain, DoB 08.09.1992 (at 10:45 PM, Alwar), Height 5'-7", Education- B.Tech, M.Tech, ICT Jaipur, Occupation- Senior Analytics, Boston Consulting Group Gurugram, Package- 18.5 LPA, Gotra : Self- Janthuriya, Mama-Sagarwasiya, Contact : Arvind Kumar Jain, D-72, H.M.M Nagar, Alwar, Mob.: 9414367288 *(Feb.)*

★ **Divesh Jain** S/o Sh. Gian Chand Jain, DoB- 29.06.1994 (at 6:15 PM), Height 5'-3", Education- Post Graduate (MCA) IGNOU, Occupation- Senior IT Engineer at Taj Hotels Delhi, Gotra : Mimunda, Contact : RZE-58, Raj Nagar Part-2, Dada Dev Road Palam, New Delhi-110077, Mob.: 9891394006, 9718869534 *(Feb.)*

★ **Raunak Jain** S/o Sh. R. K. Jain, DoB 21.01.1991 (at 7:33 AM), Height 5'-8", Education- B.Tech in Computer Science, Occupation- Team Lead in Accenture Pune, Gotra : Self- Dhati, Mama- Goyal Agrawal, Contact : 3B8, C.H.B. Jodhpur (Raj.), Mob.: 9828384341, 9587683776 (Whatsapp), Email : jainraunak21@gmail.com *(Feb.)*

★ **Vishal Jain** S/o Sh. Suresh Chand Jain, DoB 03.09.1991 (at 1:30 AM, Delhi), Height 5'-7", Education- MBA, M.Com, Occupation- Finance Analyst in Safexpress Pvt. Ltd., Gotra : Self- Aameshwari, Mama- Mai Munda, Package 3 LPA, Contact : WZ-1194, Palam, Near Dwarka-Sect. 7, New Delhi-110045, Mob.: 9810512673 *(Feb.)*

★ **Rahul Jain** S/o Sh. Vijay Kumar Jain, DoB 27.08.1994 (at 9:30 PM), Height- 5'-7", Education- B.Com., MBA, Working in Axix Bank Ltd. Sanjay Place, Agra for the Post of Gold Loan Officer, Package 3.60 LPA, Gotra : Self- Bhadarwasia, Mama- Gindora Bux, Contact : 43/223, Near Jain Mandir, Jain Gali, Sikandra, Agra-282007, Mob.: 9897303171, Email : abhajain2018@gmail.com *(Feb.)*

★ **Rahul Jain** S/o Sh. Sheel Chand Jain, DoB 19.08.1990 (at 05:00 pm), Height 5'-9", Educational- M.Com from IGNOU, Working in Magic Auto Pvt Ltd. (Maruti Authorised Dealership) As a Team Manager, Salary Package- 5.25 LPA, Gotra : Self- Mundare, Mama- Ved Varashtak, Contact : RZG-98B Ist Floor Gali no.6, Near Shyam Mandir Rajnagar Part-II, Palam Colony New Delhi-110077, Mob.: 9718967990, 9911218537, Email : rrjain619@gmail.com *(Feb.)*

★ **Amit Kumar Jain (Bhupender)** S/o Sh. Girish Chand Jain, DoB 08.03.1988 (at 02:05 pm, Agra), Height 5'-4", Educational- B.Com, Occupation- Business, Income 3 LPA, Gotra : Self- Danduriya, Mama- Barwasia, Contact : 1320, LIG, Sector 7,

Avas Vikas Colony, Bodla, Agra-282007, Mob.: 8410820442, 9897232561 *(Feb.)*

★ **Dushyant Jain** S/o Late Sh. Dharm Chand Jain, DoB 12.06.1985 (at 04:45 am), Height 5'-3", Educational- 12th, Occupation- Working in Event and Management Company at Mumbai, Gotra : Januthariya, Contact : 13, Vivek Vihar, Opp. Jain Bhawan, Sch. No. 10, Alwar, Mob.: 9929555451, 9649600786 *(Feb.)*

★ **Yash Kumar Jain** S/o Sh. Satyendra Kumar Jain, DoB 21.09.1993, Height 5'-8", Educational- M.Com., Occupation- Working as an Assistant Team Leader in Delhi-very Pvt. Ltd. at Jaipur, Gotra : Self- Badhwasiya, Mama- Singhai, Contact : Flat No. G1, Plot No. F, Vinayak Vihar, Ganpatpura, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9460418004, 9413147737 *(Feb.)*

★ **Ankit Jain** S/o Sh. Ashok Jain, DoB 02.04.1987 (at 8:45 AM, Jaipur), Education- B.Com, LLB, Preparing for RJS, Self Employed- Owner (Shreeman Dairy & Stud Farm), Gotra : Vairashtak, Contact : R-3, Tilak Marg, Ashok Nagar (Near C.B.I. Office), C-Scheme, Jaipur, Mob.: 9461686439, 97729 88857 (Anant Jain) *(Feb.)*

★ **Chirag Jain** (Aanshik Manglik) S/o Sh. Bharat Bhushan Jain, DoB 08.06.1988 (at 11:30 PM, Bharatpur), Height 5'-11", Education- MCA, Service- Knack Global Pvt. Ltd. Sitapura, Jaipur as a Network Administrator, Gotra : Self- Mudha, Mama-Chourbambar, Contact : 121-122, Pashupati Nath Nagar, Pratap Nagar, Jaipur, Mob.: 9828234847 *(Feb.)*

★ **Sudhir Jain** S/o Sh. Sumer Chand Jain, DoB- 17.03.1988 (at Alwar), Height- 5'-11", Education- M. Com, MBA, LLB, Occupation- Working in NBC Bearings, Jaipur (C. K. Birla Group), Gotra : Self- Sangarwasiya, Mama- Chaudhary, Contact : 213, Vivek Vihar, Scheme No. 10A, Dist. Alwar-301001, Mob.: 9982154002 *(Feb.)*

★ **Ravi Jain** S/o Sh. Sheetal Chand Jain, DoB 18.12.1994 (at New Delhi), Height- 5'-10", Education : B.Com, Pursuing M.Com., Profession- Own Business, Income- Above Rs. 7,50,000/- per year, Gotra : Self- Choudhary, Mama- Chor Bambhar, Contact : Band Road, Sangam Vihar, NewDelhi-80, Mob.: 9818560038, 9211981214, Email : ravijain181294@gmail.com *(Feb.)*

★ **Palak Jain** S/o Sh. Ashok Kumar Jain, DoB 19.11.1991 (at 2:35 PM), Height- 5'-7", Education- B.Com, MBA, Service- Process Analyst in (TCS) Tata Consaltancy Service, Ahmedabad, Package 4.20 LPA, Gotra : Self- Baderia, Mama- Barolia, Contact : 1724, Sector 7, Avas Vikas Colony, Bodla, Agra-282007, Mob.: 9319179796, 9758010189 *(Feb.)*

★ **Akash Jain** S/o Sh. Dinesh Chand Jain DoB 03.11.1993 (at 09:05 PM, Rawatbhata), Height- 5'-9", Education B.Tech (Electrical), Occupation- Business (Bakery, Grocery Store), Gotra : Self- Khair, Mama- Kotiya, Contact : Bazar No. 2, Rawatbhata, Dist. Chittorgarh via Kota-323307, Mob.: 9928986959, 9001002456(whats app) *(March)*

★ **Mayank Jain** (Awaiting Divorce) S/o Sh. Ravindra Kumar Jain, DoB 15.08.1988 (at 6:20 AM, Agra), Height- 5'-8", Educational- Post Graduation from St. Jhons Colg. Agra, Occupation- Business, Gotra: Self- Badwasia, Mama- Nageshwaria, Contact : Flat No. 802, Paras Pearls Apartment, Khatena Road, Loha Mandi, Agra, Mob.: 9319103033, 9412257892 *(March)*

★ **Sovil Jain** (Manglik), S/o Sh. Dharam Chand Jain, DoB 01.05.1994, Height- 5'-9", Working as Junior Asstt. MACT (Raj. Govt), Gotra : Self-Bhartiya, Mama- Kotia, Contact : Vardhman Nagar, Hindaun, Mob.: 9460758378, 9460442094 *(March)*

★ **Aditya Jain** S/o Sh. Uttam Jain, DoB 12.10.90 (at 11:20 pm, Alwar), Height -5'-6", Education- B.Tech (ECE), M.Tech (Pursuing from BITS Pilani), Occupation- Senior Software Engineer- Accenture, Gurgaon, Package-16.76 LPA, Gotra : Self- Kashmeria, Mama- Choudhary, Contact : Janakpuri-II, Imli Phatak, Jaipur, Mob.: 9414405532 *(March)*

★ **Aditya Jain** S/o Sh. Sheetal Kumar Jain, DoB 25.12.1990 (at 1:00 AM, Agra), Height 5'-8", Education- B.Tech & P.G. Diploma in Banking, Occupation- Assistant Manager in Axis Bank, Income- 4.48 LPA, Gotra : Self- Bugala, Mama- Salavadia, Contact : House No. 150, Bhudara Bazar, Karauli, Mob.: 9460913709, 9461455353, 9413886798, Email : adijain19@gmail.com *(March)*

★ **Shubham Jain** S/o Sh. Rajendra Kumar Jain, DoB 11.12.1992 (at 8:54 PM, Bharatpur), Height 5'-6", Education- B.Tech (EC), Amity University, Jaipur, Occupation- Consultant in Atos-Syntel Ltd., Pune, Package-16 LPA, Gotra : Self- Divarya, Mama- Amiya, Contact : B-3, Ranjeet Nagar, Bharatpur, Mob.: 8452843745, 9414376416, Email : pnb.rkjain@gmail.com *(March)*

★ **Arihant (Nikhil) Jain** S/o Sh. Rajendra Jain, DoB 06.03.1994 (at 12:39pm, Morena), Height- 5'-3", Fair Complexion, Education- M.Sc., Occupation- Business (Jwellers), Gotra : Self- Bedhre, Mama- Chandpuriya, Contact : Rajendra Kumar Arihant

Kumar Jain (Sarraf), Sarrafa Bazar, Morena (M.P.), Mob.: 9074301610, 9425750554 *(March)*

★ **Shubham Jain** S/o Sh. Sunil Kumar Jain, DoB 28.10.1993 (at 11:50 pm, Agra), Height 5'-8", Education B.Tech (EEE Delhi), Occupation- Software Engineer, Income 15 LPA, Gotra : Self- Salawadiya, Mama- Chandpuriya, Contact : C-3, Kedar Nagar, Shahganj, Agra, Mob.: 9837020651, 8077417805, Email : delta_agra@rediffmail.com *(March)*

★ **Mayank Jain** S/o Sh. Subhash Chand Jain, DoB 12.10.1993 (at 11:17 pm, Navgaon, Alwar), Fair Complexion, Height- 5'-10", Education B.Tech from Electrical Engineering, Occupation- Senior Software Engineer in Ernst & Young, Bangalore, India, Gotra : Self- Sripath, Mama- Kotia, Contact : House No. 8, Gupta Colony, Jawahar Nagar, Alwar-301001, Mob.: 9828227339, 9739748225, Email : subhashfsd@gmail.com, jain.shashank3189@gmail.com *(March)*

★ **Naveen Jain** S/o Sh. Vijay Kumar Jain, DoB 28.07.1994 (at 11:00 PM, Alwar), Height- 5'-9", Education- B.E. with Honors (Civil Engg 2011-15) from M.B.M. Engg College, Jodhpur, M.Tech Gold Medalist (Transportation Engg 2016-18) from MNIT Jaipur, Occupation- Central Govt. Junior Engineer in Military Engineer Services (MOD), Bhopal, Gotra : Self- Chorbambaar, Mama- Athvarsiyaa, Contact : H.No. 5, Janakpuri-B, Daudpur, Alwar, Mob.: 8003398898, Email : nvvj93@gmail.com *(March)*

★ **Sharad Jain** S/o Sh. M.M. Jain, DoB 07.02. 1988 (at 1:10 am), Height- 5'-7", Education- MBA (Marketing), Job- Marketing Manager in Infeedo (Gurgaon), Package- 16+ LPA, Gotra : Kotia, Contact : Paharganj, New Delhi *(March)*

★ **Mohit Jain** S/o Late Sh. Naveen Kumar Jain, DoB 09.08.1990 (at 6:22 AM), Height- 5'-9", Education- MBA (Marketing & Minor HR), Occupation- Business (Wholesale Mobile & Electronics Business), Gotra : Self- Gindodabaks, Mama- Barkolia, Contact : Nadbai, Bharatpur, Mob.: 9214965126, Email : mjain2279@gmail.com *(March)*

★ **Rahul Jain** S/o Sh. Ashok Kumar Jain, DoB 26.05.1993, Height- 5'-6", Education- B.Tech. (Electronics and Communication Engineering) from I.E.T. Alwar, Occupation- Branch Operation and Service Manager (Asstt. Branch Manager), AU Small Finance Bank, Malviya Nagar, Jaipur, Salary- 6 LPA, Gotra : Self- Aathvarshiya, Mama- Baroliya, Contact : 74-A, Rajendra Nagar, Niwaru Road, Jhotwara, Jaipur, Mob.: 9251269772, 8003275810, Email : rahug.jain8@gmail.com *(March)*

★ **Mohit Jain** S/o Sh. Vimal Kumar Jain, DoB 20.03.1994 (at 6:12 PM), Height- 5'-8", Education- MCA, Occupation- Branch Private Job (IT TEchnical Associate in British Telecom), Gotra : Self- Kotiya, Mama- Vijeshwari, Contact : RZ-132/2, Gali No. 4, Sadh Nagar, Palam Colony, New Delhi-110045, Mob.: 9818783172 *(March)*

★ **Prashant Kumar Jain** S/o Late Sh. Jai Prakash Jain, DoB 10.05.1987 (at 10:00 PM, Agra), Height- 5'-11", Education- MA (Sociology), Working as Purchase Manager in Real Estate Company at Agra, Gotra : Self- Salavadiya, Mama- Kashmeria, Contact : 99-A, Gayatri Vihar, Baipur Road, Sikandra, Agra, Mob.: 9319835795, 8439919999 *(March)*

★ **Himanshu Jain** S/o Sh. Manoj Mohan Jain, DoB 08.06.1994 (at 11:55 AM, Agra), Height- 5'-7", Education- Chartered Accountant, Anuj Plaza, Belanganj, Agra, Contact : Sector 6-C/612, Avas Vikas Colony, Agra, Mob.: 7060978292 *(March)*

★ **Ankur Jain** (Vinod) S/o Sh. Jagdish Prasad Jain, DoB 10.11.1990 (at 06:30 AM, Firozabad), Height- 5'-10", Fair Complexion, Education- M.Com., LLB (Pursuing), Dip. In Computer, Job- Accountant, LIC, Star Health Insurance and Army Hospital (Computer IT), Salary- 32,000/- per month, Gotra : Self- Shalawadiya, Mama- Mast Chaudhary, Contact : House No. 361, Jain Nagar, Khera, Saiyyad Wali Gali, Firozabad-283203, Mob.: 9411410575 *(March)*

★ **Nitin Jain** S/o Sh. Padam Chand Jain, DoB 17.06.1995 (at 02:45 AM), Height- 5'-7", Fair Complexion, Education- B.Sc. Computer Science, Computer Diploma, PGDCA Course, Occupation- Business, Gotra : Self- Vedya, Mama- Kher, Contact : Purani ji Main Road, Morena, Mob.: 6263104419, 9669771378 *(March)*

★ **Siddharth Jain** S/o Dr. Vimal Jain, DoB 12.12.1994, Height- 5'-11", Education- B.Tech. (Mechanical), Occupation- Software Engineer, Fidelity Investment, Banglore, Package 8.5 LPA, Gotra : Self- Athvarsia, Mama- Salavadiya, Contact : VHL-114, Vivekanand Nagar, Kota, Mob.: 9079156049 *(March)*

★ **Yash Kumar Jain** S/o Sh. Rajkumar Jain, DoB 25.05.1996, Height- 5'-6", Education- M.Com., PGDCA, Occupation- Moter Parts Business, Gotra : Contact : Shiv Shankar Colony, Near Govt. PG College, Karauli-322241, Mob.: 8104424645, 7742570454 *(March)*

* * * * *

TRAFO
Power & Electricals Pvt. Ltd.

TRAFO POWER & ELECTRICALS PVT. LTD.

AN ISO 9001:2008 COMPANY

PRODUCTS

-POWER & DISTRIBUTION TRANSFORMERS

-PRESSED STEEL RADIATORS

-SPECIAL PURPOSE TRANSFORMERS

-PACKAGE SUBSTATION

CONTACT

Trafo Power & Electricals Pvt. Ltd.
C-20 Site-C U.P.S.I.D.C., Industrial Area, Sikandra,
Agra, Uttar Pradesh - 282007, India

Phone No : +91-562-3290391
Fax : +91-562-2640388
E-mail : info@trafo.co.in

KOTSONS

POWER & DISTRIBUTION
TRANSFORMERS

Export Award Winners

ACHIEVED **100%** GROWTH IN A SINGLE YEAR

KOTSONS PVT. LTD.

(AN ISO 9001 : 2015 & ISO 14001 : 2015 CERTIFIED COMPANY)

Head Office and Unit-I
Alwar : 217A, 218 to 220 & 230A MIA,
Desula, Alwar-301030
Rajasthan, INDIA
Tel.: +91-144-2881210, 2881211
Email : kotsons@kotsons.com
Unit-II
Agra : C-21, U.P.S.I.D.C., Site-C,
Sikandra, Agra-282007,
U.P., INDIA
Tel.: +91-562-2641422, 264-1675
Email : kotsons@kotsons.com
Registered Office :
New Delhi : A-208 IInd Floor,
R.G. City Centre, Motia Khan,
Pahar Ganj, New Delhi-110055, INDIA
Tel.: +91-011-43537540
Email : kotsons@kotsons.com

DNV

Accredited by the RvA

ISO 9001 QUALITY CERTIFIED
CERTIFICATE No. QSC-3360

OHSAS 45001 : 2018

TRANSFORMING ELECTRICITY
EMPOWERING WORLD

RNI NO. RAJHIN/2012/47438 Postal Registration No. JAIPUR CITY/434/2019-21

RERA Registration No.
RAJ/P/2019/1054
www.rera.rajasthan.gov.in

Pearl
Build Trust & Loyalty

Pearl
FORTUNE
3 BHK Boutique Apartments

Your perfect home is now
at a landmark address.

16 Smart Home 3 BHK Vastu Friendly | Site : B-138, Mangal Marg, Bapu Nagar, Jaipur

Pearl
Build Trust & Loyalty

Pearl India Buildhome (P) Ltd.
"Pearl Suryavanshi", 401, A-5, Sardar Patel Marg,
C-Scheme, jaipur - 302001. INDIA, Ph.: +91 141 4014044

Dr. Raj Kumar Jain +91 9414054745
Ar. Vijay Kumar Jain +91 9829010092

2 Decades of Excellence | 3600 Villas + Plots | More than 500 Apartments | 22 'Pearl' Tower | 6 Townships

If Undelievered, please return to

श्री चन्द्रशेखर जैन *(संयोजक)*
86, श्री विहार कॉलोनी होटल क्लार्क,
आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग,
जयपुर-302018 (राज.)

पत्रिका स्वामी - अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा (रजि.) के लिए मुद्रक/प्रकाशक श्री चन्द्रशेखर जैन, 86, मगन विला, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018 ने गणेश आर्ट प्रिंटर्स, जे-51, कृष्णा मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर से मुद्रित, सम्पादक : श्री प्रकाश चन्द जैन।